राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

RNI.No. UPHIN/2012/43078

स्वतंत्र प्रभात

जो लिखेगा, वही टिकेगा

स्वतंत्र प्रभात दैनिक अख़बार तथा ऑनलाइन चैनल से सीधा जुड़ने के लिए संपर्क करे
9511151254

@swatantraprabhatmedia | @swatantramedia | 9511151254 | epaper.swatantraprabhat.com | @SwatantraPrabhatonline | news@swatantraprabhat.com

सीतापुर से प्रकाशित एंव अयोध्या ,प्रयागराज ,मिर्जापर ,गोरखपुर , बरेली ,बुंदेलखंड , उत्तराखंड , देहरादून

सीतापुर, बुधवार ,02 अप्रैल 2025

वर्ष 13, अंक 335, पृष्ट 04,मूल्यः 01 रुपया

www.swatantraprabhat.com

गाज़ियाबाद , दिल्ली , हरियाणा , चंडीगढ़ , झारखण्ड , बिहार , मध्य प्रदेश ,असम, तेलंगाना आदि जनपदो में प्रसारित

दिखा ईद का चांद, खुशियों एवं भाई चारे का प्रतीक त्यौहार ईद आज ..03

लखनऊ नगर निगम की राजस्व वसूली में बड़ा उछाल...04

जमशेदपुर एनकाउंटर में मुख्तार अंसारी का मोस्ट वांटेड शूटर ढेर

फरार के बाद से झारखंड में बना रखा था ठिकाना

ब्यूरो प्रयागराज। यूपी एसटीएफ और झारखंड पुलिस की संयुक्त टीम ने जमशेदपुर में हुए एक एनकाउंटर में मुख्तार अंसारी गिरोह के कुख्यात अपराधी अनुज कनौजिया को मार गिराया है. अनुज कनौजिया उत्तर प्रदेश से फरार होकर झारखंड के जमशेदपुर में छिपकर रह रहा था. अनुज पर हत्या, लूट, रंगदारी और गैंगस्टर सहित दो दर्जन से ज्यादा मामले दर्ज थे मुठभेड़ में मारा गया बदमाश कुख्यात अपराधी था. उस पर हत्या, लूट, रंगदारी और गैंगस्टर जैसे 23 संगीन मुकदमे मऊ-गाजीपुर समेत कई जिलों में दर्ज थे. यूपी के अलावा बिहार-झारखंड समेत कई राज्यों में उसने आपराधिक घटनाओं को अंजाम दिया था. वह कई साल से फरार चल रहा था। यूपी पुलिस को यह जानकारी मिली थी कि अनुज कनौजिया फिलहाल झारखंड के जमशेदपुर में रह रहा है. यूपी एटीएस के अधिकारियों ने बताया कि लोकेशन मिलने के बाद झारखंड एटीएस की सहायता से अनुज को गिरफ्तार करने के लिए टीम शनिवार की देर रात जमशेदपुर के गोविंदपुर के पास स्थित जनता मार्केट पहुंची थी। यूपी पुलिस और झारखंड पुलिस ने घेराबंदी की तो अनुज ने फायरिंग शुरू कर दी. पुलिस ने उसे बाहर निकलने के लिए चेतावनी दी लेकिन वह लगातार पुलिस पर गोलियां चलाता रहा. इसके बाद यूपी पुलिस ने पहले अनाउंसमेंट कर उसे सरेंडर करने को कहा, इस पर उसने एक बार फिर से अपने घर की खिड़की से फायरिंग शुरू कर दी. फायरिंग में

उत्तर प्रदेश पुलिस के डीएसपी धर्मेंद्र कुमार शाही को गोली लग गई. इसके बाद पुलिस ने जवाबी फायरिंग की, जिसमें शूटर अनुज मारा गया। अनुज कन्नौजिया मुख्तार अंसारी गैंग का सक्रिय सदस्य था. वह गैंग के लिए शूटरों की भर्ती करने के साथ हत्याओं की साजिश भी रचता था। हथियारों का शौकीन भी था. वह दोनों हाथ में पिस्टल लेकर एक साथ फायर करता था। अपने ठिकाने बदलने की वजह से वह अब तक बचता चला आ रहा था. अनुज कद में छोटा था, लेकिन जरायम की दुनिया में उसका खौफ काफी बड़ा था। मुख्तार अंसारी के अच्छे दिनों में अनुज के भी मजे थे. वह मुख्तार का काफी भरोसेमंद था. वर्ष 2012 में अनुज गोरखपुर जिला कारागार में बंद था. मुख्तार के बुरे दौर की शुरुआत होने के बाद से ही अनुज की भी मुसीबत बढ़ गई। वह STF से बचने की पूरी कोशिश करता रहा। ठिकाने बदलकर लगातार चकमा देता रहा। अनुज की पत्नी रीना राय मऊ जेल में बंद है। उसके साथ उसके 2 बच्चे भी हैं। अनुज से उसकी शादी के पीछे की कहानी थोड़ी फिल्मी है। दरअसल रीना को कोई युवक परेशान करता था। उसने अनुज से इसकी शिकायत की. इसके बाद अनुज ने उस युवक को गोली मार दी. इससे रीना अनुज को पसंद करने लगी. इसके बाद परिवार के खिलाफ जाकर उससे शादी भी कर ली. शादी के दौरान अनुज जेल में ही था. पुलिस कस्टडी में ही उसकी शादी कराई गई थी.शादी के बाद पति के जेल में होने के कारण रीना ही उसके अवैध धंधों को संभालने लगी. साल 2023 में रंगदारी के मामले में पुलिस ने रीना को झारखंड के रांची से गिरफ्तार किया था. अनुज कनौजिया पर पहले एक लाख रुपये का इनाम था. बीते गुरुवार को ही डीजीपी कार्यालय ने इनाम की राशि बढ़ाकर ढाई लाख रुपये कर दी थी.। अनुज कनौजिया का आपराधिक इतिहास बहुत लंबा है. पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार, उस पर मऊ जिले के कोतवाली थाने में सबसे ज्यादा 6 मुकदमे दर्ज हैं. इसके अलावा रानीपुर में 5, दक्षिण टोला में 2 और चिरैयाकोट में 3 मुकदमे दर्ज हैं. गाजीपुर और आजमगढ़ में भी उसके खिलाफ गंभीर धाराओं में मुकदमे दर्ज हैं। ठेके के विवाद में इंजीनियर को भी मार डाला था = 28 मार्च 2024 में मुख्तार अंसारी की मौत हो गई थी. अब एक साल बाद एसटीएफ ने मुख्तार के दाहिने हाथ रहे अनुज को ढेर कर दिया. इसके बाद एक बार फिर से अनुज के अपराधों को लेकर चर्चाओं का बाजार गर्म हो गया है। एक दौर में अनुज का मऊ में काफी खौफ था। वर्ष 2009-10 के दौरान उसने ठेके को लेकर एक इंजीनियर की भी हत्या कर दी थी। अनुज कनौजिया साल 2016 तक गोरखपुर जेल में बंद रहा. इसके बाद मेरठ भेज दिया गया. यहां उसकी जमानत हो गई. साल 2019 में मऊ में ही एक और हत्या में अनुज आरोपी था. इस मामले मुख्यार अंसारी पर भी मुकदमा दर्ज किया गया था. इसके बाद से अनुज फरार चल रह था. कोर्ट के आदेश पर साल 2021 में बहलोलपुर नवापुरा में मौजूद उसकी संपत्ति को भी कुर्क कर लिया गया था। एसटीएफ चीफ अमिताभ यश ने बताया कि उत्तर प्रदेश स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) ने झारखंड पुलिस के साथ मिलकर जमशेदपुर में शूटर अनुज को मार गिराया. वह मऊ जिले के चिरैयाकोट थाना क्षेत्र के बहलोलपुर गांव का रहने वाला था। एनकाउंटर की अगुवाई एसटीएफ के डिप्टी एसपी डीके शाही ने की. मुठभेड़ में उन्हें भी गोली लगी है। उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है। 5 साल से अनुज की तलाश की जा रही थी।

रिटायर्ड जस्टिस निर्मल यादव 17 साल बाद सीबीआई कोर्ट ने किया बरी

स्वतंत्र प्रभात

पंजाब और हरियाणा हाई कोर्ट की पूर्व जज निर्मल यादव को भ्रष्टाचार के मामले में बरी कर दिया गया है। चंडीगढ़ की स्पेशल सीबीआई कोर्ट ने 17 साल पुराने मामले में फैसला सुनाया। 2008 में सीबीआई ने मामला दर्ज किया था। 2010 में जस्टिस यादव का ट्रांसफर उत्तराखंड हाई कोर्ट में किया गया था। चंडीगढ़ की एक विशेष सीबीआई अदालत ने शनिवार को पूर्व जस्टिस निर्मल यादव को 17 साल पुराने भ्रष्टाचार के मामले में बरी कर दिया। पंजाब और हरियाणा हाई कोर्ट की पूर्व जस्टिस के अलावा सीबीआई अदालत ने मामले में 3 अन्य आरोपियों रविंदर सिंह भसीन, राजीव गुप्ता और निर्मल सिंह को भी बरी करने के आदेश दिए। मामला अगस्त 2008 में सामने आया था। केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (CBI) द्वारा गुरुवार को फैसला सुरक्षित रख लिया गया था। अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश अलका मलिक की विशेष अदालत ने आरोपियों और अभियोजन पक्ष के अंतिम तर्कों को सुना। इसके बाद कोर्ट ने फैसला सुनाने के लिए 29 मार्च की तिथि मुकर्रर की थी। जस्टिस निर्मलजीत कौर उस समय पंजाब और हरियाणा हाई कोर्ट की जज थीं। उनके घर में 15 लाख रुपये भेजे गए थे। यह बैग उनके कर्मचारी ने चंडीगढ़ पुलिस के हवाले किया था। बाद में मामले की जांच सीबीआई को सौंपी गई थी। अभियोजन पक्ष के अनुसार यह राशि हरियाणा के पूर्व अतिरिक्त महाधिवक्ता संजीव बंसल के क्लर्क द्वारा निर्मल यादव के लिए भेजी गई थी। दोनों जजों के नामों में समानता के कारण कैश गलती से जस्टिस निर्मलजीत कौर के घर पहुंच गया था। 2010 में जस्टिस यादव को उत्तराखंड हाई कोर्ट में ट्रांसफर किया गया था। यहां से सेवानिवृत्त होने से एक साल पहले उनके और दूसरे आरोपियों के खिलाफ आरोपपत्र दाखिल किया गया था। 2014 में मामले में स्पेशल कोर्ट ने 5 आरोपियों के खिलाफ आरोप तय किए थे। 2016 में मोहाली में संजीव बंसल की मौत हो गई थी। इसके चलते जनवरी 2017 में उनके खिलाफ केस बंद कर दिया गया था। जस्टिस कौर ने 2016 में गवाही के दौरान कहा था कि उनके चपरासी अमरीक ने आकर कहा था कि मैडम दिल्ली से कुछ दस्तावेज आए हैं। मैंने जैसे ही पैकेट को फाड़ा, उसमें कैश निकला था। बिना देर किए मैंने कहा था कि पकड़ो, इसको कौन लाया है

मामले में 69 लोगों ने दी गवाही

इसी दौरान संजीव बंसल ने कॉल करके कहा कि यह कैश उनके घर गलती से पहुंचा था। यह जस्टिस निर्मल यादव के लिए था, तब तक चंडीगढ़ पुलिस को सूचना दी जा चुकी थी। अभियोजन पक्ष ने मामले में 84 गवाह तय किए थे, जिनमें से 69 लोगों ने गवाही दी। इस साल फरवरी में 12 गवाहों की हाई कोर्ट ने सीबीआई से दोबारा जांच करने को कहा था। जस्टिस यादव को 1975 में पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय की बार काउंसिल के सदस्य के रूप में नामांकित किया गया था। 1986 में वे अतिरिक्त जिला और सत्र न्यायाधीश के रूप में चयनित हुई थीं। 2000 से जनवरी 2002 वे हाई कोर्ट की रजिस्ट्रार रहीं। 5 नवंबर 2004 को उन्होंने उच्च न्यायालय में जज के तौर पर शपथ ली थी।

संक्षिप्त ख़बरें

प्रयागराज में दिखा ईद का चांद,आज मनेगी ईद।

ब्यूरो प्रयागराज। चांद दिखने के बाद अब देश के तमाम दूसरे हिस्सों की तरह

प्रयागराज में भी कल सोमवार को मनाया जाएगा ईद उल फितर का त्यौहार। चांद दिखने के बाद लोगों ने पटाखे फोड़े और आतिशबाजी की है। गले मिलकर एक दूसरे को ईद की मुबारकबाद दी है।

आग लगने से 130बीघा गेहूं की फसल जल कर राख

सिद्धार्थनगर । इटवा तहसील क्षेत्र के सुहेलवा चरखवा गांव में शनिवार रात जर्जर विद्युत तार के चिंगारी से गेहूं की फसल में आग लग गई।ग्रामीण जब तक आग पर काबू पाते तब तक लगभग तीस बीघा गेहूं जल कर राख हो चुका था ।ग्राम प्रधान इरशाद अहमद

और युवा नेता मनीष सिंह क्रांतिकारी ने दमकल विभाग को सूचना दी।दमकल के पहुंचने से पहले ग्रामीणों के कड़ी मेहनत के कारण आग बुझाई जा चुकी थी।इस बीच अचल,विदेश्वरी,कपिल और वाजिद के फसल जल कर राख हो गए।ग्रामीणों का कहना है कि लोकल लाइनमैन के चलते आग जानी की घटना हुई है।हल्का लेखपाल सच्चिदानंद मिश्र ने बताया कि सर्वे किया जा रहा है,इसकी रिपोर्ट प्रशासन को सौंपी जाएगी। उधर शोहरतगढ़ तहसील क्षेत्र के पिकौरा और मदरहिया के सीवान में अज्ञात कारणों से गेहूं की खड़ी फसल में आग लग गई। देखते ही देखते आग ने विकराल रूप धारण कर लिया, जिससे करीब डेढ़ दर्जन से अधिक किसानों की सौ बीघे से अधिक फसल जलकर राख हो गई।

जिला पंचायत सदस्य अकालबुन व प्रतिनिधि बब्बू चौधरी पर गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज

साजिश एवं धोखाधड़ी, जालसाजी, जान से मारने की धमकी का मुकदमा थाना गैड़ास बुजुर्ग में दर्ज हुआ है।

स्वतंत्र प्रभात

उतरौला(बलरामपुर)। गैड़ास बुजुर्ग थाना क्षेत्र के ग्राम चिचूड़ी सहंगिया निवासी वसीउद्दीन उर्फ बब्बू चौधरी, निजामुद्दीन, फसीहुद्दीन, वजीउद्दीन, रहीमुद्दीन, अकालबुन, शोएब अहमद, अबू कलाम, लल्लूराम समेत नौ लोगों पर साजिश एवं धोखाधड़ी, जालसाजी, जान से मारने की धमकी का मुकदमा थाना गैड़ास बुजुर्ग में दर्ज हुआ है। क्षेत्र के ही ग्राम टेढ़वा तप्पा बांक महुआ बाजार निवासी नवाब खान ने पुलिस अधीक्षक से शिकायत कर बताया था कि इन लोगों ने पीड़ित के हिस्से की जमीन से अपने अंश की जमीन से अधिक जमीन का फर्जी बैनामा कर दिया है। और अब यह लोग

मिलकर पीड़ित की जमीन पर जबरन कब्जा करके पीड़ित को ही बेदखल करने पर आमादा हैं। नवाब खान ने कहा कि विपक्षीगण भूमाफिया एवं अराजक प्रवृत्ति के लोग हैं। पीड़ित को गाली गुप्ता देने के साथ जान से मारने की धमकी भी दे रहे हैं। वसीऊद्दीन चौधरी उर्फ बब्बू पुत्र अलीहसन के विरुद्ध वर्ष 2019 तथा 2020 में अपराधिक घटनाओं को अंजाम सम्बंधी विविधि धाराओं में अभियोग पंजीकृत किए गए थे। आज भी अपराध को अंजाम देता रहता है। भारतीय दंड विधान के अध्याय 16, 17 व 22 में वर्णित अपराध का अभ्यस्त अपराधी है इसकी सामान्य ख्याति दुस्साहसिक और जन समुदाय के लिए खतरनाक व्यक्ति होने की है। इसकी आपराधिक गतिविधियों के चलते कोई भी व्यक्ति इसके विरुद्ध साक्ष्य देने एवं अभियोग पंजीकृत करने का साहस नहीं करता है।

आई एफ एफ डी सी द्वारा संचालित बीज विधायन संयंत्र मैगलगंज का प्रबंध निदेशक ने लिया जायजा

स्वतंत्र प्रभात

ब्यूरो प्रयागराज। आई एफ एफ डी सी द्वारा संचालित बीज विधायन संयंत्र मैगलगंज का प्रबंध निदेशक डॉ उदय शंकर अवस्थी ने लिया जायजा। परियोजना प्रबंधक आर के द्विवेदी द्वारा प्रगति की जानकारी दी गई। प्रबंध निदेशक द्वारा बीज उत्पादन हेतु आई एफ एफ डी सी के कार्यो की प्रशंसा की तथा संस्था के कर्मियों को बधाई दिया।इस दौरान बीज उत्पादन से जुड़े 70 से अधिक किसानों ने स्वागत किया।प्रबंध निदेशक ने नैनो उर्वरक प्रयोग कर रहे किसानों से वार्ता किया और खुशी जाहिर करते हुए किसानों को फूलपुर प्लांट का भ्रमण करने हेतु निर्देशित किया।

बड़ा घोटाला | **भीटी ब्लॉक के नरहरपुर गांव में बनाए जा रहे सरकारी नलकूप संख्या 252 एजी में बड़े पैमाने पर घटिया निर्माण हो रहा है**

सरकारी नलकूप निर्माण में बड़ा घोटाला घटिया सामग्री से हो रहा काम

स्वतंत्र प्रभात

अंबेडकर नगर। सरकार किसानों की भलाई के लिए सिंचाई योजनाओं पर करोड़ों रुपए खर्च कर रही है, लेकिन भ्रष्टाचारियों ने इस पर भी सेंध लगा दी है। भीटी ब्लॉक के नरहरपुर गांव में बनाए जा रहे सरकारी नलकूप संख्या 252 एजी में बड़े पैमाने पर घटिया निर्माण हो रहा है। ग्रामीणों की शिकायत के बावजूद अधिकारी और ठेकेदार मिलकर सरकार की योजनाओं को पलीता लगा रहे हैं।

पीली ईंट और सफेद बालू से दीवारें खड़ी

नलकूप निर्माण में सरकारी मानकों को दरकिनार कर दिया गया है। ग्रामीणों ने बताया कि दीवारों में मजबूत लाल ईंट की बजाय कमजोर पीली ईंटों का इस्तेमाल किया जा रहा है। इतना ही नहीं, निर्माण में मोरंग की जगह सफेद बालू मिलाकर दीवारों को तैयार किया

जा रहा है, जिससे पूरी संरचना कमजोर हो जाएगी। ग्रामीणों का कहना है कि यह निर्माण महज दिखावे के लिए किया जा रहा है, जो कुछ ही महीनों में धराशायी हो सकता है।

कम कर दी गई कमरे की लंबाई-चौड़ाई

नलकूप के लिए बनाए जा रहे कमरे का आकार भी तय मानकों से छोटा कर दिया गया है। सवाल उठता है कि जब सरकार ने नलकूप निर्माण के लिए पर्याप्त बजट जारी किया है, तो फिर निर्माण में कटौती क्यों की जा रही है? ग्रामीणों का आरोप है कि यह सब अधिकारियों और ठेकेदारों की मिलीभगत से किया जा रहा है ताकि अधिक से अधिक पैसा बचाकर हड़पा जा सके।

शिकायतों पर भी नहीं हो रही कार्रवाई

ग्रामीणों ने जब इस घोटाले की शिकायत जूनियर इंजीनियर (JE) से की, तो उन्होंने कोई संज्ञान नहीं लिया। यही नहीं, जब मीडिया ने इस मामले में JE से संपर्क करने की कोशिश की, तो उन्होंने फोन तक नहीं उठाया। इससे साफ जाहिर होता है कि पूरा सिस्टम इस भ्रष्टाचार में लिप्त है और जिम्मेदार अधिकारी सवालों से बच रहे हैं।

सरकार की सख्ती के बावजूद क्यों हो रहा भ्रष्टाचार?

योगी आदित्यनाथ की सरकार भ्रष्टाचार पर ज़ीरो टॉलरेंस की नीति अपना रही है, लेकिन जमीनी स्तर पर अधिकारी और ठेकेदार बेखौफ हैं। नरहरपुर गांव में सरकारी नलकूप का यह घटिया निर्माण सरकार की छवि खराब करने की साजिश भी हो सकता है। अगर समय रहते इस पर कार्रवाई नहीं हुई तो सरकारी धन की बर्बादी के साथ ही किसानों की उम्मीदों पर भी पानी फिर जाएगा।

ग्रामीणों की मांग - हो उच्च स्तरीय जांच

ग्रामीणों ने इस मामले की उच्च स्तरीय जांच की मांग की है। उनका कहना है कि घटिया सामग्री से बने इस नलकूप की गुणवत्ता की तुरंत जांच कराई जाए और जो भी अधिकारी या ठेकेदार दोषी पाए जाएं, उन पर कड़ी कार्रवाई की जाए। अगर जल्द ही इस पर कोई कदम नहीं उठाया गया तो ग्रामीण विरोध प्रदर्शन करने को मजबूर होंगे। अब देखना यह होगा कि प्रशासन इस घोटाले पर क्या कार्रवाई करता है, या फिर भ्रष्टाचारियों को खुली छूट मिलती रहेगी।

प्रयागराज में हॉस्टल के चौथी मंजिल से कूदकर बीटेक के छात्र ने दी जान!

प्रयागराज। शहर के झलवा स्थित ट्रिपलआईटी के छात्रावास की चौथी मंजिल से बीटेक के छात्र ने कूदकर जान दे दी। बीस वर्षीय यह छात्र राहुल मडला तेलंगाना का रहने वाला था और बीटेक इन्फार्मेशन टेक्नालॉजी

प्रथम वर्ष का छात्र था। राहुल मूक और बधिर था। उसने रात करीब डेढ़ बजे छात्रावास की चौथी मंजिल से छलांग लगा दी। इसके बाद छात्रावास में हड़कंप मच गया। संस्थान के तमाम शिक्षक और अधिकारी मौके पर पहुंच गए। घटना के बाद छात्रों ने काफी हंगामा किया। सूचना पाकर पहुंची पुलिस ने पहुंचकर छात्रों को समझाया। छात्र के कमरे से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। फिलहाल पुलिस मामले की छानबीन कर रही है। छात्र ने किन परिस्थितियों में यह कदम उठाया इसका पता नहीं चल सका है।

चैत्र माह में चेतने का मौक़ा देती है प्रकृति

हिंदी का नया साल चैत्र मास से शुरू होता है। मेरे लिए ये महीना बहुत महत्वपूर्ण है। मेरी दादी बताया करतीं थीं कि मै चैत्र मास में ही अवतरित हुआ था। इसी महीने में चेतुओं की किस्मत चेतती है। दादी निरक्षर थीं लेकिन पंचांग के बारे में उन्हें पता नहीं कहाँ से पता चल जाता था। वे बताती थीं कि चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि को हिंदू नववर्ष की शुरुआत होती है। इसी दिन से चैत्र नवरात्रि के पावन पर्व का शुभारंभ भी होता है। इस बार चैत्र मास 30 मार्च 2025 यानी आज से शुरू हुआ तो दादी की बहुत याद आयी। वे पक्की सनातनी थीं किन्तु मैंने उन्हें कभी व्रत -उपवास करते नहीं देखा ,जबकि ठीक उनके विपरीत मेरी माँ को तीज-त्यौहार,व्रत,उपवास में गहरी दिलचस्पी थी। उनकी देखा-देखी मैंने भी अनेक बार चैत्र मास में 9 दिन के न सिर्फ व्रत किये बल्कि दो मर्तबा गवालियर से करौली तक 208 किमी की लम्बी और कठिन पदयात्रा भी की।

आज का पंचांग बता रहा है कि इस तिथि पर रेवती नक्षत्र और ऐन्द्र योग के साथ सर्वार्थ सिद्धि योग का निर्माण भी हो रहा है। इसके अलावा यह दिन हिंदू नववर्ष विक्रम संवत 2082 के रूप में आया है, जिसमें सूर्य और चंद्र देव दोनों मीन राशि में मौजूद हैं।आज के ही दिन देश-दुनिया में ईद का त्यौहार भी मनाया जा रहा है लेकिन भारत में तमाम पाबंदियों के साथ। कहते हैं न कि -जिसकी लाठी,उसकी भैंस। आज लाठी हमारे हाथ में हैं। इसलिए भैंस भी हमारी है। हमारी भैंस के आगे बीन बजाने का कोई फायदा नहीं ,क्योंकि वो ससुरी खड़ी-खड़ी पगुराती रहती है । बीन की धुन पर नाचना उसे आता ही नहीं है।उसे न मणिपुर कि जलने से कोई फर्क पड़ता है और न कुणाल कामरा काण्ड से।

आप कहेंगे कि नया साल और नए साल का पहला दिन में ये भैंस कहाँ से आ गयी। तो आपको बता दें कि भैंस से हमारा सनातन नाता है,ये बात अलग है कि हम किसी भैंस को अपनी माता नहीं कहते,जबकि भैंस ,गौमाता से जायदा दूध देती है,ज्यादा गोबर देती है और ज्यादा मांसाहार भी देती है। दुर्भाग्य ये है कि हमारे यहां भैंसपुत्र केवल बलि के लिए इस्तेमाल किये जाते है। किसी जमाने में भैंसे पंचायतों ,नगर निगमों में कचरा गाडी खींचने के काम भी आते थे किन्तु अब तो बेचारे सिर्फ कटते हैं और लोगों के पेट भरने के काम आते हैं। भैंसों के नाम परदुनिया के किसी देश में कोई राजनीती नहीं होती । कम से कम हमारे देश में तो नहीं होती । हमारे यहां गायों के नाम पर राजनीति भी होती है और लिंचिंग भी। दुर्भाग्य ये है कि भारत में अभी तक किसी ने भैंसशाला नहीं खोली इसीलिए भैंसे अक्सर सड़क पर आवारगी करते देखी जा सकतीं हैं।

मै कट्टर सनातनी हूँ, फिर भी इन ज्योतिषियों की वजह से हमेशा परेशान रहते है। ये हर त्यौहार को सुलभ के बजाय दुर्लभ बताकर ऐसा उन्माद पैदा करते हैं कि आधा देश महाकुम्भ में नहाने जा धमकता है ,दीवाली पर ऐसा पुष्य योग बताते हैं कि आधा देश भले कटोरा लिए खड़ा रहे लेकिन बाकी देश सर्राफा बाजार या मोटरकार बाजार में खड़ा नजर आता है। ज्योतिषी इस बार भी नहीं माने। ज्योतिषीय गणना के मुताबिक लगभग 100 वर्षों बाद नवरात्रि के प्रथम दिन पंचग्रही योग का निर्माण भी हो रहा है. इसके साथ ही पहले दिन सर्वार्थ सिद्धि ,इंद्र, बुद्धदित्य ,शुक्रदित्य, लक्ष्मी नारायण जैसे शुभ योग का निर्माण हो रहा है.। हमारा सौभाग्य है या दुर्भाग्य कि ये ज्योतिषी हमारे पास ही सबसे जायदा है। दूसरे मजहबों में भी हैं लेकिन वे इतने शातिर नहीं हैं जितने किहमारे हैं। हम पढ़े-लिखे हों या अनपढ़ सब के सब ज्योतिषियों के इशारों पर नाचते हैं।

कभी-कभी मै सोचता हूँ कि हमारे पास भले ही वैज्ञानिक कम हों किन्तु ज्योतिषी इफरात में है। काश ऐसे ही ज्योतिषी म्यांमार वालों के पास होते । कम से कम वे ये तो बता देते कि वहां जो भूकमंप आया है वो किस दुर्लभ योग में आया है और उसके क्या लाभ-हानि है। किस राशि के जातकों के लिए भूकंप जानलेवा साबित होगा और कौन सा महफूज रहेगा ? म्यांमार वालों के साथ हमारी गहन संवदना है। हमारी सनातनी सरकार ने म्यांमार के भूकंप पीड़ितों की इमदाद के लिए लेफ्टिनेंट कर्नल जगनीत गिल के नेतृत्व में शत्रुजीत ब्रिगेड मेडिकल रिस्पॉन्डर्स की 118 सदस्यीय टीम आवश्यक चिकित्सा उपकरणों और आपूर्ति के साथ शीघ्र ही म्यांमार के लिए रवाना हुई. यह टीम जरूरी चिकित्सा उपकरणों और आपूर्ति के साथ एयरबोर्न एंजल्स टास्क फोर्स के रूप में तैनात की जा रही है, ये फोर्स आपदा-प्रभावित क्षेत्रों में उन्नत चिकित्सा और सर्जरी सेवाएं देने के लिए प्रशिक्षित है।

हम शुक्रगुजार हैं भारत सरकार की दरियादिली के, कि उसने कम से कम चैत्र मास में कोई तो पुण्यकार्य किया ! अन्यथा मुमकिन था कि हमारे गृहमंत्री अड़ जाते कि - नहीं! म्यांमार में राहत भेजने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि वहां के रोहिंग्या मुसलमान भी इस राहत का फायदा उठाएंगे। हमारी सरकार को मुसलमानों से खासी चिढ है,फिर चाहे वे हिन्दुस्तानी हों या बांग्लादेशी या म्यांमारी। हमारे यहां मुसलमान ही हैं जो सड़क पर नमाज नहीं पढ़ सकते,सड़क तो छोड़िये अपने घर की छत पर नमाज नहीं पढ़ सकते। मुसलमानों को छोड़ दुसरे मजहबों का कोई भी आदमी कुछ भी कर सकता है। उसके लिए कोईपाबन्दी नहीं है।

इस नवरात्रि पर मै भी 9 दिन के व्रत रख रखा हूँ। मेरी देवी में भारी आशक्ति है। मेरी कामना है कि देवी माँ भारत की पुण्य भूमि पर पैदा होने वाले हर हिंदुस्तानी का कल्याण करें। मुझे उम्मीद है कि ऐसा होगा भी ,क्योंकि हमारी देवियाँ नेताओं की तरह हिन्दू-मुसलमान नहीं देखतीं कल्याण करते वक्त। हमने जितनी भी किम्वदंतियां या लोक कथाएं पढ़ी हैं उनमें किसी में भी किसी देवी ने किसी खान साहब का वध नहीं किया। उन्होंने महिषासुर को मारा। मुसलमानों में भी शैतान के बच्चे पैदा होते हैं जो आतंकवादी हो जाते हैं लेकिन उनका नाश करने के लिए देवियों ने दूसरी व्यवस्था की है। हिन्दुओं में भी शैतान होते हैं ,वे भी आदमी तो आदमी इमारतों और कब्रों तक को जमीदोज कर देते हैं ,लेकिन उनका इलाज हमारी देवियों के पास नहीं है।

चूंकि हमारे सनातनियों को अब विक्रम सम्वत में आस्था है इसलिए उन्हें इस नववर्ष की बधाइयां ,चूंकि आज ही ईद है इसलिए मुसलमानों को ईद मुबारक और म्यांमार के भूकंप पीड़ितों को अपनी हार्दिक संवेदनाएं देते हुए मै अपने आपको खुशनसीब समझता हूँ क्योंकि आज से 9

राकेश अचल

संपादकीय

छोटे और बड़े पर्दे के स्टार्स बनाम सोशल मीडिया- क्या सोशल मीडिया उनकी छवि बनाए रखने के लिए प्रभावी है?

आजकल, छोटे और बड़े पर्दे के स्टार्स को लोकप्रियता बनाए रखने के लिए सोशल मीडिया का सहारा लेना पड़ रहा है। इसके कई कारण हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से वे सीधे अपने दर्शकों और प्रशंसकों से जुड़ जाते हैं। यह उन्हें अपने फैंस के साथ सीधे संवाद करने और अपनी जिन्दगी के अपडेट्स, वीडियोज और फोटोज शेयर करने का अवसर देता है। इससे फॉलोवर्स को ऐसा महसूस होता है कि वे अपने पसंदीदा स्टार को और करीब से जानते हैं। स्टार्स, सोशल मीडिया का उपयोग अपनी फिल्मों, टीवी शो कार्यक्रमों और अन्य प्रोजेक्ट्स को प्रमोट करने के लिए भी करते हैं। वे ट्रेलर, गाने और बिहाइंड-द-सीन वीडियोज शेयर करते हैं, जिससे फैंस में उत्साह बढ़ता है। सोशल मीडिया स्टार्स के लिए ब्रांड प्रमोशन का एक प्रभावी माध्यम बन गया है। कई ब्रांड्स उन्हें अपने प्रोडक्ट्स का प्रचार करने के लिए हायर करते हैं, जिससे उन्हें अच्छी खासी कमाई होती है।

सोशल मीडिया, छोटे और बड़े पर्दे के स्टार्स को नए प्रशंसकों तक पहुंचने में मदद करता है। वे अपनी पहुंच को बढ़ाकर वैश्विक स्तर पर अपने फैन बेस का विस्तार करते हैं। कलाकार अपनी छवि को खुद नियंत्रित कर सकते हैं और अपनी पसंद की सामग्री शेयर कर सकते हैं। हालांकि, ज्यादातर मामलों में स्टार्स अपने सोशल मीडिया टेक्निकल एक्सपर्ट के माध्यम से अपनी सामग्री शेयर करते हैं। उनके पास वक्त की कमी होती है। सोशल मीडिया आज फिल्मों और टीवी शो के प्रचार के लिए एक शक्तिशाली प्लेटफॉर्म बन गया है। हालांकि, इन सब फायदों के बावजूद सोशल मीडिया के तमाम नुकसान हैं जो स्टार्स को झेलने पड़ते हैं। सोशल मीडिया पर मौजूदगी के कारण स्टार्स की प्राइवेसी प्रभावित हो सकती है। उनकी पर्सनल जानकारियां और तस्वीरें लीक होने की संभावना पूरी तरह बढ़ जाती है। इससे वे असुरक्षित महसूस कर सकते हैं।

स्टार्स को अक्सर ट्रोलिंग और नकारात्मक टिप्पणियों का सामना करना पड़ता है। यह उनकी मानसिक सेहत पर बुरा प्रभाव डालता है। इससे उनकी छवि को नुकसान पहुंचता है। सोशल मीडिया पर अफवाहें और गलत जानकारी बहुत तेजी से फैलती हैं। इससे स्टार्स के बारे में गलत धारणाएं बनती है और उनकी प्रतिष्ठा को नुकसान होता है। कभी-कभी, स्टार्स द्वारा किए गए विवादास्पद पोस्ट या कॉमेंट्स उन्हें मुश्किल में डाल देती है। इससे उनकी छवि खराब होती है और कभी-कभी कानूनी समस्याओं का सामना भी करना पड़ता है। सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग स्टार्स के पेशेवर और पर्सनल लाइफ को प्रभावित कर सकता है। यह उनकी उत्पादकता को कम करता है और उनके व्यक्तिगत संबंधों में तनाव पैदा करता है।

असल सवाल यह है कि क्या सोशल मीडिया बड़े स्टार्स की छवि को नुकसान पहुंचाता है? यह कहना कठिन है कि सोशल मीडिया छोटे और बड़े पर्दे के स्टार्स की छवि को खराब करता है या नहीं। कुछ मामलों में, सोशल मीडिया ने स्टार्स को अपनी छवि को बेहतर बनाने में मदद की है, जबकि कुछ मामलों में, इसने उनकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाया है। यह सब इस बात पर निर्भर करता है कि स्टार्स सोशल मीडिया का उपयोग कैसे करते हैं। जो कलाकार सोच-समझकर और संतुलित तरीके से सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं, वे अपनी छवि को मजबूत करते हैं। दूसरी तरफ, जो कलाकार लापरवाह तरीके से सोशल मीडिया का इस्तेमाल करते हैं, उनकी छवि को नुकसान पहुंचता है।

सोशल मीडिया की शक्ति को नकारा नहीं जा सकता। छोटे और बड़े पर्दे के स्टार्स को इसे बहुत सोच-समझकर उपयोग करना चाहिए। उन्हें अपनी पर्सनल लाइफ और प्रोफेशनल लाइफ के बीच संतुलन बनाकर चलना चाहिए और किसी भी ऐसी गतिविधि से बचना चाहिए जो उनकी छवि को नुकसान पहुंचाती हो।

लेखक- कृष्ण कुमार

आदिशक्ति माँ नवदुर्गा श्रष्टि रूप एवं नौ विशिष्ट औषधियों मे विद्यमान हैं जिन्हे पसंदीदा भोग लगा किया जा सकता हैं प्रसन्न

÷आदि शक्ति जगत जननी माँ भगवती दुर्गा ने जगत कल्याण हेतु क्रमशः नौ अलग अलग रुप धारण करके पांचो तत्वों मे विद्यमान होकर सभी प्राणियों सहित सभी जड़ चेतन मे समाई हूई है। भगवती दुर्गा माता ने 9 रुप धारण किये जिनके अलग अलग 9 रुप व नामॉ से जाना जाता है। ब्रम्हा कवच के अनुसार नौ दुर्गा 9 बिशिष्ट औषधियो मे जीवन दायिनी संजीवनी के रुप मे बिराजमान है । साधक भक्त और व्रती माँ नवदुर्गा को प्रसन्न करने के लिये माता के 9 रुपों की नवरातों मे प्रतिदिन एक एक देवी माँ के रुपों की पूजा आराधना कर माँ का पसंदीदा भोग पृसाद लगाकर माता रानी को प्रसन्न कर मनवान्छित मनोकामनाओ की प्राप्ति करते है÷

आदिशक्ति जगत जननी भगवती माँ दुर्गा के 9 रूपों का अलग अलग पूजन नवरात्रि के 9 दिन मे किया जाता है। माता के इन 9 रूपों को %नवदुर्गा% के नवरात्रि के नाम से जाना जाता है। नवरात्र के 9 दिनों में मां दुर्गा के जिन 9 रूपों का पूजन किया जाता है उनमें पहला शैलपुत्री, दूसरा ब्रह्मचारिणी, तीसरा चंद्रघंटा, चौथा कूष्मांडा, पांचवां स्कंदमाता, छठा कात्यायनी, सातवां कालरात्रि, आठवां महागौरी और नौवां सिद्धिदात्री का पूजन किया जाता है। माता रानी को नवरात्र के 9 दिनों में 9 देवियों के 9 रुपों को अलग-अलग भोग लगा कर भगवती मां को प्रसन्न किया जा सकता है। इस बार 30 अप्रैल दिन रविवार चैत्र शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से नवरात्रि का शुभारंभ हो रहा है। पहले दिन माता के प्रथम रूप माता शैलपुत्री का पूजन जो पर्वतराज हिमालय की पुत्री हैं माता शैलपुत्री को गाय का शुद्ध घी अर्पित करने से आरोग्य का आशीर्वाद प्राप्त होता है और उपवास करने वाला निरोगी रहता है।श्री दुर्गा के द्वितीय रूप माता ब्रह्मचारिणी तपस्विनी स्वरूपा माता पार्वती ने भगवान शंकर को पति के रूप में पाने के लिए तप किया था तब उनका नाम ब्रह्मचारिणी पड़ा। माता ब्रह्मचारिणी को प्रसन्न करने के लिए उनको शकर का भोग लगाने से घर के सभी सदस्यों की आयु में बृद्धि होती है। तीसरे रूप में माता चंद्रघंटा सभी भक्तो की मनोइच्छा पूरी करती है इनके पूजन से भक्त सांसारिक कष्टों से मुक्ति पाता है। माता को दूध या दूध से बनी मिठाई अथवा खीर का भोग लगाने ब्राह्मण को खिलाने दक्षिणा देने से उपवासक को दुःखों से मुक्ति प्राप्त होती है और उसे परमानंद की प्राप्ति होती चौथा दिन माता कूष्मांडा जिनके उदर से ब्रह्मांड की उत्पत्ति हुई है। इनके पूजन से समस्त रोग-शोक कष्ट नष्ट हो जाते हैं। माता कूष्मांडा को मालपुओं का भोग लगाने व प्रसाद बांटने से माता प्रसन्न होकर उपवासक की बुद्धि का विकास करती हैं और साथ-साथ निर्णय करने की शक्ति भी बढ़ाती है। पांचवें दिन माता स्कंदमाता जो कि कुमार कार्तिकेय की माँ है। माता के इस रूप की आराधना करने से उपवासक को स्वत- ही सभी सिद्धियां प्राप्त होती हैं। माता को केले का भोग लगाने से शरीर स्वस्थ रहता है। छठा दिवस माँ कात्यायनी माता का है जो ऋषि कात्यायन की पुत्री हैं। इसी कारण कात्यायनी कहलाई। जिनको शहद का भोग लगाया जाता है। माता को शहद का भोग लगाने से उपवासक की आकर्षण शक्ति में वृद्धि होती है।सप्तम दिन में माता के कालरात्रि स्वरूप की पूजा-आराधना की जाती है। जो काल अर्थात बुरी शक्तियों का नाश करने वाली हैं। माता को गुड़ का भोग लगाया जाता है। जिससे साधक वृती पर आने वाले शोक से मुक्ति मिलती है व उपवासक पर आकस्मिक रूप से आने वाले संकट से निजात मिलते हैं। श्री दुर्गा अष्टमी के दिन माता के आठवें रूप महागौरी की पूजा करने पर माता प्रसन्न होकर वृती के हर असंभव कार्य को भी संभव कर आशीर्वाद देती हैं। माता को भोग में नारियल का भोग लगाया जाता है यह माता निःसंतानों को सन्तान की मनोकामना पूरी करती है। नवरात्र के नौवें दिन माता सिद्धिदात्री सभी प्रकार की सिद्धियां देने वाली है। इन्हें सिद्धियों की स्वामिनी भी कहा जाता है माता को तिल का भोग लगाना इस दिन कल्याणकारी रहता है जो व्यक्ति को मृत्यु के भय से राहत देता है और अनहोनी घटनाओं से बचाता है।

मां दुर्गा के नव स्वरूपो मे श्रष्टि दर्शन कुछ प्रकार है प्रथम 1 शैलपुत्री- सम्पूर्ण जड़ पदार्थ भगवती का पहला स्वरूप हैं पत्थर मिट्टी जल वायु अग्नि आकाश सब शैल पुत्री का प्रथम रूप हैं। इस पूजन का अर्थ है प्रत्येक जड़ पदार्थ में परमात्मा को महसूस करना द्वितीय 2 ब्रह्मचारिणी- जड़ में ज्ञान का प्रस्फुरण चेतना का संचार भगवती के दूसरे रूप का प्रादुर्भाव है। जड़ चेतन का संयोग है। प्रत्येक अंकुरण में इसे देख सकते हैं। तृतीय 3 चंद्रघंटा-भगवती का तीसरा रूप है यहाँ जीव में वाणी प्रकट होती है जिसकी अंतिम परिणिति मनुष्य में बैखरी (वाणी) है चतुर्थ 4 कुष्मांडा- अर्थात अंडे को धारण करने वाली स्त्री और पुरुष की गर्भधारण गर्भाधान शक्ति है जो भगवती की ही शक्ति है जिसे समस्त प्राणी मात्र में देखा जा सकताहै। पंचम 5 स्कन्दमाता-पुत्रवती माता-पिता का स्वरूप है अथवा प्रत्येक पुत्रवान माता-पिता स्कन्द माता के रूप हैं। षष्ठम 6 कात्यायनी- के रूप

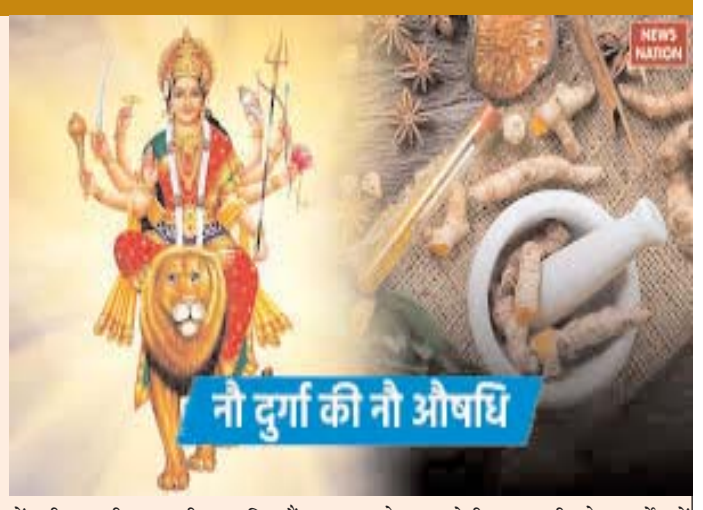

में वही भगवती कन्या की माता-पिता हैं। यह देवी का छठा स्वरुप है। सप्तम 7 कालरात्रि-देवी भगवती का सातवां रूप है जिससे सब जड़ चेतन मृत्यु को प्राप्त होते हैं ओर मृत्यु के समय सब प्राणियों को इस स्वरूप का अनुभव होता है। भगवती के इन सात स्वरूपों के दर्शन सबको प्रत्यक्ष सुलभ होते हैं। परन्तु माँ के आठवां और नौवां स्वरूप सुलभ नहीं है। भगवती का आठवां स्वरूप महागौरी गौर वर्ण का है। यह ज्ञान अथवा बोध का प्रतीक है जिसे जन्म जन्मांतर की साधना से पाया जा सकता है। इसे प्राप्त कर साधक परम सिद्ध हो जाता है। इसलिए इसे सिद्धिदात्री कहा है।

ब्रम्हा जी के दुर्गा कवच में वर्णित नवदुर्गा नौ विशिष्ट औषधियों में आज भी विराजमान हैं (1) प्रथम शैलपुत्री (हरड़) कई प्रकार के रोगों में काम आने वाली औषधि हरड़ हिमावती है जो देवी शैलपुत्री का ही एक रूप है। यह आयुर्वेद की प्रधान औषधि है। यह पथया, हरीतिका, अमृता, हेमवती, कायस्थ, चेतकी और श्रेयसी सात प्रकार की होती है(2)ब्रह्मचारिणी (ब्राह्मी) ब्राह्मी आयु व याददाश्त बढ़ाकर, रक्तविकारों को दूर कर स्वर को मधुर बनाती है। इसलिए इसे सरस्वती भी कहा जाता है।(3) चंद्रघंटा (चंदुसूर) यह एक ?सा पौधा है जो धनिए के समान है। यह औषधि मोटापा दूर करने में लाभप्रद है इसलिए इसे चर्महंती भी कहते हैं।

(4) कूष्मांडा (पेठा) इस औषधि से पेठा मिठाई बनती है। इसलिए इस रूप को पेठा कहते हैं। इसे कुम्हड़ा भी कहते हैं जो रक्त विकार दूर कर पेट को साफ करने में सहायक है। मानसिक रोगों में यह अमृत समान है। (5) स्कंदमाता (अलसी) देवी स्कंदमाता औषधि के रूप में अलसी में विद्यमान हैं। यह वात, पित्त व कफ रोगों की नाशक औषधि है। (6) कात्यायनी (मोइया) देवी कात्यायनी को आयुर्वेद में कई नामों से जाना जाता है जैसे अम्बा, अम्बालिका व अम्बिका इसके अलावा इन्हें मोइया भी कहते हैं। यह औषधि कफ पित्त व गले के रोगों का नाश करती है।(7) कालरात्रि (नागदौन) यह देवी नागदौन औषधि के रूप में जानी जाती हैं। यह सभी प्रकार के रोगों में लाभकारी और मन एवं मस्तिष्क के विकारों को दूर करने वाली औषधि है।(8) महागौरी (तुलसी) तुलसी सात प्रकार की होती है सफेद तुलसी, काली तुलसी, मरूता, दवना, कुढेरक, अर्जक और षटपत्र ये रक्त को साफ कर ह्रदय रोगों का नाश करती है (9) सिद्धिदात्री(शतावरी) दुर्गा का नौवां रूप सिद्धिदात्री है जिसे नारायणी शतावरी कहते हैं। यह बल बुद्धि एवं विवेक के लिए उपयोगी है।

आदि शक्ति जगत जननी भगवती मां दुर्गा का नवरात्रि के पावन अवसर पर श्रद्धा भाव भक्ति के साथ व्रत पूजन पाठ विधि विधान पूर्वक करने से महामाई अवश्य प्रसन्न होती है माता रानी अपने भक्तों को मनोवांछित वर प्रदान कर सभी मनोकामनाएं अवश्य पूरी करती है। इस चैत्र नवरात्रि के पावन अवसर पर हम अपनी इष्ट व आराध्य देवी माँ आदि शक्ति जगत जननी जगदंबा भगवती माँ नवदुर्गा के चरणों मे अनन्त कोटि नमन बन्दन पूजन आराधन करते हुये सभी ब्रती व भक्तों एवं साधकों समेत इष्ट मित्रो सगे संबंधियों सुधी पाठकों सहित आम जन मानस के प्रति सुख समृद्धी की कामना सहित शुभ कामनाएं देता हुँ। भगवती महामाई सभी की मनोकामनाएं पूर्ण करें। सभी सुखी निरोगी दीर्घायु हो माता रानी की कृपा और आशीर्वाद हम सभी पर सदैव बनी रहे।

धर्मेन्द्र कुमार सिंह

स्त्री विमर्श की ओर बढ़ता शोध जगत

भारत सहित विश्वभर में स्त्री विमर्श एक महत्वपूर्ण बौद्धिक विषय बन चुका है। साहित्य, समाजशास्त्र, राजनीति और इतिहास जैसे विभिन्न शैक्षिक क्षेत्रों में पीएचडी शोधार्थियों का झुकाव तेजी से स्त्री-विमर्श की ओर बढ़ रहा है। यह न केवल समाज में व्याप्त लैंगिक असमानता को उजागर करने का माध्यम बन रहा है, बल्कि नारीवादी दृष्टिकोण से इतिहास और संस्कृति को नए सिरे से समझने का अवसर भी प्रदान कर रहा है। स्त्री-अधिकारों, लैंगिक समानता और महिलाओं के सामाजिक-आर्थिक उत्थान से जुड़े मुद्दों पर शोध का विस्तार हो रहा है, जिससे महिलाओं की स्थिति को एक नए परिप्रेक्ष्य में देखा जा रहा है। आज के दौर में पीएचडी स्कॉलर्स विभिन्न ऐतिहासिक घटनाओं, साहित्यिक कृतियों, सामाजिक संरचनाओं और राजनीतिक परिप्रेक्ष्यों में स्त्रियों की भूमिका और उनके अधिकारों की पड़ताल कर रहे हैं। शोध का यह नया रुझान केवल नारीवादी सिद्धांतों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पितृसत्तात्मक व्यवस्था को चुनौती देते हुए एक समतामूलक समाज की परिकल्पना भी प्रस्तुत करता है। साथ ही, यह शोध महिलाओं के कानूनी अधिकारों, कार्यस्थल पर उनकी स्थिति, राजनीतिक भागीदारी और शिक्षा में उनकी भूमिका को भी उजागर कर रहा है। अनेक शोध साहित्यिक कृतियों में स्त्री के चित्रण, उनके संघर्ष और उनकी अस्मिता की पहचान पर केंद्रित हैं। महादेवी वर्मा, इस्मत चुगताई, अमृता प्रीतम और तसलीमा नसरीन जैसी लेखिकाओं के साहित्य को एक नए दृष्टिकोण से देखने का प्रयास किया जा रहा है। साथ ही, आधुनिक लेखकों द्वारा प्रस्तुत महिला चरित्रों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण भी तेजी से हो रहा है। विभिन्न भाषाओं के साहित्य में महिलाओं के संघर्षों और उनके द्वारा किए गए सामाजिक बदलावों पर शोध कार्य बढ़ रहा है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि साहित्य न केवल समाज का दर्पण है, बल्कि सामाजिक बदलाव का एक प्रभावी उपकरण भी है। प्रौद्योगिकी और सामाजिक मीडिया के बढ़ते प्रभाव के कारण स्त्री-विमर्श को नया मंच मिला है।

डिजिटल माध्यमों के जरिए नई पीढ़ी के शोधार्थी समाज में व्याप्त लैंगिक भेदभाव, घरेलू हिंसा, कार्यस्थल पर उत्पीड़न और महिला सशक्तिकरण जैसे विषयों पर शोध कर रहे हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि स्त्री-विमर्श केवल बौद्धिक चर्चा तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह समाज में वास्तविक परिवर्तन लाने का एक प्रभावी साधन बन रहा है। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, ब्लॉग, और सोशल मीडिया के माध्यम से स्त्री-विमर्श पर आधारित शोध अधिक व्यापक और प्रभावी बन रहा है, जिससे जागरूकता में वृद्धि हो रही है।नारीवादी सिद्धांतों ने शोध के तरीकों और विषय-वस्तु को गहराई से प्रभावित किया है। समकालीन शोधकर्ता नारीवाद के विभिन्न तरंगों, जैसे उदारवादी नारीवाद, समाजवादी नारीवाद, कट्टर नारीवाद और दलित नारीवाद के माध्यम से समाज में महिलाओं की स्थिति का आकलन कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त, ट्रांस-विमर्श और समलैंगिक स्त्री विमर्श भी महत्वपूर्ण शोध विषय बन चुके हैं। स्त्री विमर्श के प्रति शोधार्थियों की बढ़ती रुचि यह दर्शाती है कि भविष्य में लैंगिक समानता की दिशा में और भी गहन अध्ययन होंगे। शोध से प्राप्त निष्कर्षों का प्रभाव नीतियों और समाज के दृष्टिकोण पर भी पड़ेगा। विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों को इस दिशा में और अधिक समर्थन और संसाधन प्रदान करने की आवश्यकता है ताकि यह विमर्श और अधिक सशक्त रूप में आगे बढ़ सके। पीएचडी शोधार्थियों द्वारा स्त्री-विमर्श की ओर बढ़ता रुझान न केवल एक बौद्धिक आंदोलन का संकेत है, बल्कि यह भविष्य में एक अधिक समतामूलक और न्यायसंगत समाज की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम भी है। यह विमर्श सिर्फ महिलाओं के लिए नहीं, बल्कि संपूर्ण समाज के लिए आवश्यक है, जिससे लैंगिक समानता की दिशा में ठोस परिवर्तन संभव हो सके। स्त्री-विमर्श का यह विकास समाज में महिलाओं की सशक्त उपस्थिति को और भी प्रभावी बनाएगा तथा लैंगिक समानता की दिशा में ठोस परिणाम उत्पन्न करेगा। साथ ही, इस शोध का प्रभाव केवल अकादमिक जगत तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि यह नीतिगत सुधारों, सामाजिक संरचनाओं और सांस्कृतिक बदलावों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

हंसराज चौरसिया

मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक रवि कुमार अवस्थी द्वारा सुशीला स्टेडी बेल एकेडमी 117-मोहल्ला विजय लक्ष्मी नगर परगना खैराबाद तहसील व जनपद -सीतापुर से प्रकाशित तथा महावीर आफसेट 28, हीवेट रोड लखनऊ से मुद्रित। सम्पादक रवि कुमार अवस्थी समाचार पत्र में छपे समस्त समाचार संवाददाताओं के अपने श्रोत एवं संकलन हैं, जिनसे सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **नोटः**-उपरोक्त सभी पद अवैतनिक एवं स्वयंसेवी हैं तथा समाचार पत्र से सम्बंधित सारे विवादो का न्याय क्षेत्र सीतापुर होगा। **R.N.I NO. UPHIN/2012/43078 मो0 नं0 -9511151254,** E-Mail :- news@swatantraprabhat .com

संक्षिप्त ख़बरें

सफलता के लिए छात्राओं को कड़ी मेहनत करनी चाहिए : उप जिलाधिकारी मनीष कुमार

बिसवां सीतापुर। छात्राओं को जीवन में संतुलित रहकर शिक्षा के प्रति एकाग्रता रखते हुए शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर भी ध्यान देना चाहिए समय का समुचित उपयोग करके लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए उक्त बातें उप जिलाधिकारी मनीष कुमार ने स्थानीय कृष्णा देवी म्युनिसिपल गर्ल्स इंटर कॉलेज में परीक्षा फल वितरण करते समय कहीं उन्होंने आगे कहा कि सफलता के लिए छात्राओं को कड़ी मेहनत करनी चाहिए। इस अवसर पर लॉयर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष कमलेन्द्र कुमार बाजपेई ने छात्राओं को लक्ष्य निर्धारित कर शिक्षा पर ध्यान देने की बात कही। इस अवसर पर मुख्य रूप से विद्यालय की प्रधानाचार्य लक्ष्मी देवी उप प्रधानाचार्य उषा अवस्थी लॉयर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष कमलेन्द्र कुमार बाजपेयी सहित भारी संख्या में छात्राएं उपस्थित रहीं ।

मां दुर्गा प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर निकाली गई कलश यात्रा

सिद्धार्थनगर। विकास क्षेत्र भनवापुर के सोहना गांव में दुर्गा माता मन्दिर में पांच दिवसीय मां दुर्गा प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा के लिए रविवार को कलश यात्रा का आयोजन किया गया।यज्ञाचार्य पंडित राकेश तिवारी के

अगुवाई में सोहना स्थिति मां दुर्गा के मंदिर से कलश में जल लेने के लिए कलश यात्रा गाजे बाजे के साथ नकथर देवरिया, बुढ़ऊ, सुकालाजोत, भनवापुर, बदलियां होते हुए राप्ती नदी डुमरियागंज घाट पहुंची । जहां पर वैदिक मंत्रोच्चार के साथ जल भरा गया। तत्पश्चात वहां से वापस आकर मंदिर पर विधि-विधान से पूजन कर कलश स्थापित किया गया। आयोजक चिंकू गुप्ता ने बताया कि रविवार से पांच दिन शाम 7 बजे से 10 बजे तक कथा का आयोजन किया गया है।सोमवार को मंडप पूजन,मंगलवार को भव्य शोभा यात्रा,बुधवार को प्राण प्रतिष्ठा तथा गुरुवार को हवन का कार्यक्रम होगा। इस अवसर पर राकेश यादव,गुड्डू यादव, ओमप्रकाश, रामचंद्र भारती, अजय गुप्ता ,उदय राज भारती आदि लोग मौजूद रहे।

तेज रफ्तार ट्रक की जोरदार टक्कर से एक की मौत, दो घायल

राजापुर, चित्रकूट। जिले के राजापुर थाना क्षेत्र के कर्वी राष्ट्रीय राजमार्ग स्थित अर्जुनपुर के पास एक दर्दनाक हादसा हुआ, जिसमें तेज रफ्तार ट्रक ने पीछे से ट्रैक्टर को जोरदार टक्कर मार दी। इस हादसे में ट्रैक्टर में सवार एक व्यक्ति की मौत हो गई, जबकि दो अन्य लोग घायल हो गए। टक्कर इतनी भयंकर थी कि ट्रैक्टर की ट्रॉली काफी दूर जा गिरी। हादसा उस समय हुआ जब अमानपुर कपसेठी के निवासी अरुण कुमार (56 वर्ष), राजू (46 वर्ष), और फूलचन्द्र (45 वर्ष) ट्रैक्टर से तिरहार क्षेत्र के देवारी गाँव में भूसा लेने जा रहे थे। ट्रैक्टर जैसे ही कर्वी की ओर बढ़ा, तेज रफ्तार ट्रक ने उसे पीछे से टक्कर मार दी। टक्कर के बाद तीनों लोग सड़क पर गिर गए और घायल हो गए। यह दृश्य देखकर आसपास के लोग और राहगीरों ने तुरंत राजापुर

थाने के थानाध्यक्ष प्रवीण सिंह को सूचना दी। सूचना मिलने के बाद थानाध्यक्ष प्रवीण सिंह और उनकी टीम तुरंत घटनास्थल पर पहुंचे। आनन-फानन में एम्बुलेंस के जरिए घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र राजापुर में भर्ती कराया गया। जहाँ डॉक्टर दिनेश सिंह ने फूलचन्द्र को मृत घोषित कर दिया, जबकि अरुण और राजू को मामूली चोटें आईं। राजापुर थानाध्यक्ष प्रवीण सिंह ने बताया कि घटना के बाद शव को कब्जे में लेते हुए मृतक फूलचन्द्र का पंचनामा तैयार किया गया और शव को पोस्टमॉर्टम के लिए कर्वी भेज दिया गया। साथ ही ट्रक चालक को गिरफ्तार कर लिया गया और ट्रक को पुलिस ने कब्जे में ले लिया है। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है और मृतक के परिवार को उचित सहायता देने की प्रक्रिया भी शुरू कर दी गई है। यह हादसा कर्वी-राजापुर मार्ग पर तेज रफ्तार वाहनों के चलते होने वाली दुर्घटनाओं का उदाहरण बन गया है। पुलिस प्रशासन ने सभी वाहन चालकों से अपील की है कि वे सड़क पर गति सीमा का पालन करें और सुरक्षित तरीके से यात्रा करें।

मां दुर्गा प्रतिमा प्राण प्रतिष्ठा को लेकर निकाली गई कलश यात्रा

स्वतंत्र प्रभात

सिद्धार्थनगर। विकास क्षेत्र भनवापुर के सोहना गांव में दुर्गा माता मन्दिर में पांच दिवसीय मां दुर्गा प्रतिमा प्राण प्रतिष्ठा के लिए रविवार को कलश यात्रा का आयोजन किया गया।यज्ञाचार्य पंडित राकेश तिवारी के अगुवाई में सोहना स्थिति मां दुर्गा के मंदिर से कलश में जल लेने के लिए कलश यात्रा गाजे बाजे के साथ नकथर देवरिया, बुढ़ऊ,सुकालाजोत, भनवापुर, बदलियां होते हुए राप्ती नदी डुमरियागंज घाट पहुंची । जहां पर वैदिक मंत्रोच्चार के साथ जल भरा गया। तत्पश्चात वहां से वापस आकर मंदिर पर विधि-विधान से पूजन कर कलश स्थापित किया गया। आयोजक चिंकू गुप्ता ने बताया कि रविवार से पांच दिन शाम 7 बजे से 10 बजे तक कथा का आयोजन किया गया है।सोमवार को मंडप पूजन,मंगलवार को भव्य शोभा यात्रा,बुधवार को प्राण प्रतिष्ठा तथा गुरुवार को हवन का कार्यक्रम होगा। इस अवसर पर राकेश यादव,गुड्डू यादव, ओमप्रकाश, रामचंद्र भारती, अजय गुप्ता ,उदय राज भारती आदि लोग मौजूद रहे।

प्राकृतिक नव यौवन के साथ आता है नवसंवत्सर डॉ कमल कौशिक

स्वतंत्र प्रभात

मथुरा। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ यमुनापार मथुरा महानगर के वर्ष प्रतिपदा कार्यक्रम में बोलते हुये मुख्य वक्ता मथुरा विभाग के प्रचार प्रमुख डॉ कमल कौशिक ने कहा कि नव संवत्सर यानी भारतीय नव वर्ष प्रकृति के नव यौवन के साथ समस्त प्राणियों को नवजीवन प्रदान करता है।चौत्र शुक्ल प्रतिपदा विक्रमी सम्वत 2082 आज सूर्य की पहली किरण के साथ प्रारम्भ हुआ। पेडों पर नए पत्ते और पशु पक्षियों में हर्सोल्लास का मौसमी अनुकूल वतावरण के साथ प्रतिवर्ष नवसंवत सर बसंत ऋतु में आता है। उन्होंने आगे कहा कि विश्व के सबसे बड़े स्वयंसेवी संगठन आर एस एस के संस्थापक डॉ हेडगेवार जी का जन्म भी आज ही के दिन हुआ था।इसलिये पूरे अनुशासन और समय बद्धता के साथ संघ के स्वयंसेवक इस उत्सव को मनाते हैं। कार्यक्रम में मंच पर नगर संघचालक वैध धर्मपाल जी और डॉ कमल कौशिक जी रहे। मुख्य शिक्षक बृजमोहन जी,गनगीत दिनेश जी ने बोला तथा एकल गीत सत्यवीर जी ने गाया, कार्यक्रम में यमुना नगर के स्वयंसेवक पूर्ण गणवेश में समय से उपस्थित रहे।कार्यक्रम का संचालन नगर कार्यवाह रणवीर जी किया।

कार्यालय ग्राम पंचायत गौराभारी विकासखंड पचपेड़वा जनपद बलरामपुर

निविदा/सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है की पंचम वित्त आयोग/स्वच्छ भारत अभियान पेज 2 व 15वां वित निर्माण कार्य नाली /खड़ंजा निर्माण/खड़ंजा मरम्मत/पंचायत भवन निर्माण/सामुदायिक शौचालय आयोग/मनरेगा/एस0एल0डब्ल्यू0एम0 आदि योजना के अंतर्गत वर्ष 2025-2026मैं कराए जाने वाले निर्माण/आंगनबाड़ी केंद्र निर्माण मरम्मत/ इंडिया मार्का 2 हैंडपंप मरम्मत व रिवोर/स्कूल शौचालय मरम्मत/ स्ट्रीट लाइट इंटरलॉकिंग रोड निर्माण सीसी रोड निर्माण ,सी एस सी सेंटर निर्माण कार्य मनरेगा योजना अन्तर्गत फूल व बांस की खेती ऐनम सेंटर रंगाई पुताई व मरम्मत कार्य खाद्य एवं रसद गोदाम निर्माण कार्य आर आर सी सेंटर, सोख्ता गड्ढा सीट चेमबर खाद गड्ढा खेल मैदान ,सोलर लाइट ह्यूमपाइप/पंचायत कार्यालय सामग्री कायाकल्प संबंधित कार्य/रजिस्टर्ड फर्म एजेंसी से सामग्री क्रय हेतु प्रथम श्रेणी ईट इंटर लाकिंग ईट मिट्टी क्रय पत्थर गिट्टी, बालू,मोरंग ह्यूम पाइप प्राइमर, पेंट ,शौचालय लोहे का दरवाजा इंडियामार्का हैंडपंप मरम्मत व रिबोर एवं मोरंग/ सीरिया /सीमेंट इंटरलॉकिंग/ टाइल्स विभिन्न माप की ह्यूम पाईप मनरेगा योजना के तहत पशु शेड, सोख्ता गड्ढा निर्माण गौशाला में गौ वंश को खिलाने हेतु भूसा दाना चुनी चोकर वा भंडारण हेतु कक्ष निर्माण आदि से संबंधित सामाग्री आदि एक हेतु सामाग्री की सील बन्द निविदा दिनांक 03-04-2025 से दिनांक 14-04-2025 तक डाला जाएगा जो तत्पश्चात खोले 05-04-2025को ग्राम पंचायत कार्यलय पर अपराह्न 11~30 बजे ग्राम पंचायत कार्यालय पर खोली जायेगी। उक्त सभी आपूर्ति की जाने वाली सामाग्री वर्ष 2025/26तक मान्य होगी। वर्तमान समय मे उत्तर प्रदेश लोकनिर्माण विभाग विशिस्तियों के अनुसार परिमंडल गोण्डा द्वारा निर्धारित दरों के सापेक्ष की जायेगी। शेष नियम व शर्ते किसी भी समय ग्राम पंचायत कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है।।

नियम व शर्ते

1- जिस आपूर्तिकर्ता की दर सबसे कम हो उसे ग्राम पंचायत द्वारा कराए जाने वाले कार्य हेतु सूचित किया जायेगा यदि आपूर्तिकर्ता द्वारा निर्धारित समय सीमा पर आपूर्ति नहीं किया जाता है तो ऐसी दसा में ग्राम पंचायत आपके आदेश निरस्त करते हुए वरीयता कम मे अन्य फर्मो को आपूर्ति आदेश देने के लिए स्वतन्त्र होगी।

2- फर्म का जीएसटी पंजीकृत हो आयेकर देता हो की प्रमाणित छायाप्रति संलग्न करना आवश्यक है। विगत तीन वर्ष का आयकर क्लीयरेंस संलग्न करना अनिवार्य है।

3- ग्राम पंचायत सचिव/ग्राम प्रधान द्वारा नामित अधिकारियों कर्मचारियों द्वारा आपूर्तिकर्ता की मौजूदगी में निविदा खेला जाएगा।

4- सामाग्री की आपूर्ति ग्राम पंचायत की परिधि में स्वीकिर्त दरों से निर्धारित कार्यस्थल पर करनी होगी।

5- जो दरें प्रस्तुत की जायें वह दरें जीएसटी तथा धुलाई,चढ़ाई, उतरवाई तथा अन्य कर जोड़कर प्रस्तुत की जाए।

6- सामाग्री की आपूर्ति सचिव ग्राम पंचायत/ग्राम प्रधान के आपूर्ति आदेश पर ही की जायेगी।

7- प्रस्तुति दरें पीडब्ल्यूडी द्वारा स्वीकृत दरों से अधिक होनी चाहिए।

8- स्वीकृत आपूर्तिकर्ता को भुगतान तकनीक/अवराभियांत द्वारा सामाग्री की गुणवत्ता की परमाणित होने तथा मापन के उपरांत ही किया जायेगा गुणवत्ता खराब होने पर आपूर्तिकर्ता को भुगतान नहीं किया जायेगा।प टेंडर की प्रक्रिया निरस्त/अस्थगित करने का पूर्ण अधिकार ग्राम पंचायत को होगा।

प्रधान
विध्यावती

सचिव
हौसला प्रसाद

कार्यालय ग्राम पंचायत भगवानपुर खादर विकासखंड पचपेड़वा जनपद बलरामपुर

निविदा/सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है की पंचम वित्त आयोग/स्वच्छ भारत अभियान पेज 2 व 15वां वित निर्माण कार्य नाली /खड़ंजा निर्माण/खड़ंजा मरम्मत/पंचायत भवन निर्माण/सामुदायिक शौचालय आयोग/मनरेगा/एस0एल0डब्ल्यू0एम0 आदि योजना के अंतर्गत वर्ष 2025-2026मैं कराए जाने वाले निर्माण/आंगनबाड़ी केंद्र निर्माण मरम्मत/ इंडिया मार्का 2 हैंडपंप मरम्मत व रिवोर/स्कूल शौचालय मरम्मत/ स्ट्रीट लाइट इंटरलॉकिंग रोड निर्माण सीसी रोड निर्माण ,सी एस सी सेंटर निर्माण कार्य मनरेगा योजना अन्तर्गत फूल व बांस की खेती ऐनम सेंटर रंगाई पुताई व मरम्मत कार्य खाद्य एवं रसद गोदाम निर्माण कार्य आर आर सी सेंटर, सोख्ता गड्ढा सीट चेमबर खाद गड्ढा खेल मैदान ,सोलर लाइट ह्यूमपाइप/पंचायत कार्यालय सामग्री कायाकल्प संबंधित कार्य/रजिस्टर्ड फर्म एजेंसी से सामग्री क्रय हेतु प्रथम श्रेणी ईट इंटर लाकिंग ईट मिट्टी क्रय पत्थर गिट्टी, बालू,मोरंग ह्यूम पाइप प्राइमर, पेंट ,शौचालय लोहे का दरवाजा इंडियामार्का हैंडपंप मरम्मत व रिबोर एवं मोरंग/ सीरिया /सीमेंट इंटरलॉकिंग/ टाइल्स विभिन्न माप की ह्यूम पाईप मनरेगा योजना के तहत पशु शेड, सोख्ता गड्ढा निर्माण गौशाला में गौ वंश को खिलाने हेतु भूसा दाना चुनी चोकर वा भंडारण हेतु कक्ष निर्माण आदि से संबंधित सामाग्री आदि क्रय हेतु सामाग्री की सील बन्द निविदा दिनांक 03-04-2025 से दिनांक 05-04-2025तक डाला जाएगा जो तत्पश्चात दिनांक 7-04-2025 को ग्राम पंचायत कार्यलय पर अपराह्न 11बजे ग्राम पंचायत कार्यालय पर खोली जायेगी। उक्त सभी आपूर्ति की जाने वाली सामाग्री वर्ष 2025/26तक मान्य होगी। वर्तमान समय मे उत्तर प्रदेश लोकनिर्माण विभाग विशिस्तियों के अनुसार परिमंडल गोण्डा द्वारा निर्धारित दरों के सापेक्ष की जायेगी। शेष नियम व शर्ते किसी भी समय ग्राम पंचायत कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है।।

नियम व शर्ते

1- जिस आपूर्तिकर्ता की दर सबसे कम हो उसे ग्राम पंचायत द्वारा कराए जाने वाले कार्य हेतु सूचित किया जायेगा यदि आपूर्तिकर्ता द्वारा निर्धारित समय सीमा पर आपूर्ति नहीं किया जाता है तो ऐसी दसा में ग्राम पंचायत आपके आदेश निरस्त करते हुए वरीयता कम मे अन्य फर्मो को आपूर्ति आदेश देने के लिए स्वतन्त्र होगी।

2- फर्म का जीएसटी पंजीकृत हो आयेकर देता हो की प्रमाणित छायाप्रति संलग्न करना आवश्यक है। विगत तीन वर्ष का आयकर क्लीयरेंस संलग्न करना अनिवार्य है।

3- ग्राम पंचायत सचिव/ग्राम प्रधान द्वारा नामित अधिकारियों कर्मचारियों द्वारा आपूर्तिकर्ता की मौजूदगी में निविदा खेला जाएगा।

4- सामाग्री की आपूर्ति ग्राम पंचायत की परिधि में स्वीकिर्त दरों से निर्धारित कार्यस्थल पर करनी होगी।

5- जो दरें प्रस्तुत की जायें वह दरें जीएसटी तथा धुलाई,चढ़ाई, उतरवाई तथा अन्य कर जोड़कर प्रस्तुत की जाए।

6- सामाग्री की आपूर्ति सचिव ग्राम पंचायत/ग्राम प्रधान के आपूर्ति आदेश पर ही की जायेगी।

7- प्रस्तुति दरें पीडब्ल्यूडी द्वारा स्वीकृत दरों से अधिक होनी चाहिए।

8- स्वीकृत आपूर्तिकर्ता को भुगतान तकनीक/अवराभियांत द्वारा सामाग्री की गुणवत्ता की परमाणित होने तथा मापन के उपरांत ही किया जायेगा गुणवत्ता खराब होने पर आपूर्तिकर्ता को भुगतान नहीं किया जायेगा। टेंडर की प्रक्रिया निरस्त/अस्थगित करने का पूर्ण अधिकार ग्राम पंचायत को होगा।

प्रधान
बेकाठ उर्फ बेकारू

सचिव
हौसला प्रसाद

कार्यालय ग्राम पंचायत सिसवा विकासखंड पचपेड़वा जनपद बलरामपुर

निविदा/सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है की पंचम वित्त आयोग/स्वच्छ भारत अभियान पेज 2 व 15वां वित निर्माण कार्य नाली /खड़ंजा निर्माण/खड़ंजा मरम्मत/पंचायत भवन निर्माण/सामुदायिक शौचालय आयोग/मनरेगा/एस0एल0डब्ल्यू0एम0 आदि योजना के अंतर्गत वर्ष 2025-2026मैं कराए जाने वाले निर्माण/आंगनबाड़ी केंद्र निर्माण मरम्मत/ इंडिया मार्का 2 हैंडपंप मरम्मत व रिवोर/स्कूल शौचालय मरम्मत/ स्ट्रीट लाइट इंटरलॉकिंग रोड निर्माण सीसी रोड निर्माण ,सी एस सी सेंटर निर्माण कार्य मनरेगा योजना अन्तर्गत फूल व बांस की खेती ऐनम सेंटर रंगाई पुताई व मरम्मत कार्य खाद्य एवं रसद गोदाम निर्माण कार्य आर आर सी सेंटर, सोख्ता गड्ढा सीट चेमबर खाद गड्ढा खेल मैदान ,सोलर लाइट ह्यूमपाइप/पंचायत कार्यालय सामग्री कायाकल्प संबंधित कार्य/रजिस्टर्ड फर्म एजेंसी से सामग्री क्रय हेतु प्रथम श्रेणी ईट इंटर लाकिंग ईट मिट्टी क्रय पत्थर गिट्टी, बालू,मोरंग ह्यूम पाइप प्राइमर, पेंट ,शौचालय लोहे का दरवाजा इंडियामार्का हैंडपंप मरम्मत व रिबोर एवं मोरंग/ सीरिया /सीमेंट इंटरलॉकिंग/ टाइल्स विभिन्न माप की ह्यूम पाईप मनरेगा योजना के तहत पशु शेड, सोख्ता गड्ढा निर्माण गौशाला में गौ वंश को खिलाने हेतु भूसा दाना चुनी चोकर वा भंडारण हेतु कक्ष निर्माण आदि से संबंधित सामाग्री आदि क्रय हेतु सामाग्री की सील बन्द निविदा दिनांक 03-04-2025 से दिनांक 5-04-2025 तक डाला जाएगा5 जो तत्पश्चात दिनांक 6-04-2025 को ग्राम पंचायत कार्यलय पर अपराह्न 01बजे ग्राम पंचायत कार्यालय पर खोली जायेगी। उक्त सभी आपूर्ति की जाने वाली सामाग्री वर्ष 2025/26तक मान्य होगी। वर्तमान समय मे उत्तर प्रदेश लोकनिर्माण विभाग विशिस्तियों के अनुसार परिमंडल गोण्डा द्वारा निर्धारित दरों के सापेक्ष की जायेगी। शेष नियम व शर्ते किसी भी समय ग्राम पंचायत कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है।।

नियम व शर्ते

1- जिस आपूर्तिकर्ता की दर सबसे कम हो उसे ग्राम पंचायत द्वारा कराए जाने वाले कार्य हेतु सूचित किया जायेगा यदि आपूर्तिकर्ता द्वारा निर्धारित समय सीमा पर आपूर्ति नहीं किया जाता है तो ऐसी दसा में ग्राम पंचायत आपके आदेश निरस्त करते हुए वरीयता कम मे अन्य फर्मो को आपूर्ति आदेश देने के लिए स्वतन्त्र होगी।

2- फर्म का जीएसटी पंजीकृत हो आयेकर देता हो की प्रमाणित छायाप्रति संलग्न करना आवश्यक है। विगत तीन वर्ष का आयकर क्लीयरेंस संलग्न करना अनिवार्य है।

3- ग्राम पंचायत सचिव/ग्राम प्रधान द्वारा नामित अधिकारियों कर्मचारियों द्वारा आपूर्तिकर्ता की मौजूदगी में निविदा खेला जाएगा।

4- सामाग्री की आपूर्ति ग्राम पंचायत की परिधि में स्वीकिर्त दरों से निर्धारित कार्यस्थल पर करनी होगी।

5- जो दरें प्रस्तुत की जायें वह दरें जीएसटी तथा धुलाई,चढ़ाई, उतरवाई तथा अन्य कर जोड़कर प्रस्तुत की जाए।

6- सामाग्री की आपूर्ति सचिव ग्राम पंचायत/ग्राम प्रधान के आपूर्ति आदेश पर ही की जायेगी।

7- प्रस्तुति दरें पीडब्ल्यूडी द्वारा स्वीकृत दरों से अधिक होनी चाहिए।

8- स्वीकृत आपूर्तिकर्ता को भुगतान तकनीक/अवराभियांत द्वारा सामाग्री की गुणवत्ता की परमाणित होने तथा मापन के उपरांत ही किया जायेगा गुणवत्ता खराब होने पर आपूर्तिकर्ता को भुगतान नहीं किया जायेगा। टेंडर की प्रक्रिया निरस्त/अस्थगित करने का पूर्ण अधिकार ग्राम पंचायत को होगा।

प्रधान
अमीर अहमद

सचिव
हौसला प्रसाद

कार्यालय ग्राम पंचायत मोतीपुर सेमरी विकासखंड पचपेड़वा जनपद बलरामपुर

निविदा/सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है की पंचम वित्त आयोग/स्वच्छ भारत अभियान पेज 2 व 15वां वित निर्माण कार्य नाली /खड़ंजा निर्माण/खड़ंजा मरम्मत/पंचायत भवन निर्माण/सामुदायिक शौचालय आयोग/मनरेगा/एस0एल0डब्ल्यू0एम0 आदि योजना के अंतर्गत वर्ष 2025-2026मैं कराए जाने वाले निर्माण/आंगनबाड़ी केंद्र निर्माण मरम्मत/ इंडिया मार्का 2 हैंडपंप मरम्मत व रिवोर/स्कूल शौचालय मरम्मत/ स्ट्रीट लाइट इंटरलॉकिंग रोड निर्माण सीसी रोड निर्माण ,सी एस सी सेंटर निर्माण कार्य मनरेगा योजना अन्तर्गत फूल व बांस की खेती ऐनम सेंटर रंगाई पुताई व मरम्मत कार्य खाद्य एवं रसद गोदाम निर्माण कार्य आर आर सी सेंटर, सोख्ता गड्ढा सीट चेमबर खाद गड्ढा खेल मैदान ,सोलर लाइट ह्यूमपाइप/पंचायत कार्यालय सामग्री कायाकल्प संबंधित कार्य/रजिस्टर्ड फर्म एजेंसी से सामग्री क्रय हेतु प्रथम श्रेणी ईट इंटर लाकिंग ईट मिट्टी क्रय पत्थर गिट्टी, बालू,मोरंग ह्यूम पाइप प्राइमर, पेंट ,शौचालय लोहे का दरवाजा इंडियामार्का हैंडपंप मरम्मत व रिबोर एवं मोरंग/ सीरिया /सीमेंट इंटरलॉकिंग/ टाइल्स विभिन्न माप की ह्यूम पाईप मनरेगा योजना के तहत पशु शेड, सोख्ता गड्ढा निर्माण गौशाला में गौ वंश को खिलाने हेतु भूसा दाना चुनी चोकर वा भंडारण हेतु कक्ष निर्माण आदि से संबंधित सामाग्री आदि क्रय हेतु सामाग्री की सील बन्द निविदा दिनांक 03-04-2025 से दिनांक 6-04-2025 तक डाला जाएगा जो तत्पश्चात दिनांक 07-04-2025को ग्राम पंचायत कार्यलय पर अपराह्न 12 ~30 बजे ग्राम पंचायत कार्यालय पर खोली जायेगी। उक्त सभी आपूर्ति की जाने वाली सामाग्री वर्ष 2025/26तक मान्य होगी। वर्तमान समय मे उत्तर प्रदेश लोकनिर्माण विभाग विशिस्तियों के अनुसार परिमंडल गोण्डा द्वारा निर्धारित दरों के सापेक्ष की जायेगी। शेष नियम व शर्ते किसी भी समय ग्राम पंचायत कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है।।

नियम व शर्ते

1- जिस आपूर्तिकर्ता की दर सबसे कम हो उसे ग्राम पंचायत द्वारा कराए जाने वाले कार्य हेतु सूचित किया जायेगा यदि आपूर्तिकर्ता द्वारा निर्धारित समय सीमा पर आपूर्ति नहीं किया जाता है तो ऐसी दसा में ग्राम पंचायत आपके आदेश निरस्त करते हुए वरीयता कम मे अन्य फर्मो को आपूर्ति आदेश देने के लिए स्वतन्त्र होगी।

2- फर्म का जीएसटी पंजीकृत हो आयेकर देता हो की प्रमाणित छायाप्रति संलग्न करना आवश्यक है। विगत तीन वर्ष का आयकर क्लीयरेंस संलग्न करना अनिवार्य है।

3- ग्राम पंचायत सचिव/ग्राम प्रधान द्वारा नामित अधिकारियों कर्मचारियों द्वारा आपूर्तिकर्ता की मौजूदगी में निविदा खेला जाएगा।

4- सामाग्री की आपूर्ति ग्राम पंचायत की परिधि में स्वीकिर्त दरों से निर्धारित कार्यस्थल पर करनी होगी।

5- जो दरें प्रस्तुत की जायें वह दरें जीएसटी तथा धुलाई,चढ़ाई, उतरवाई तथा अन्य कर जोड़कर प्रस्तुत की जाए।

6- सामाग्री की आपूर्ति सचिव ग्राम पंचायत/ग्राम प्रधान के आपूर्ति आदेश पर ही की जायेगी।

7- प्रस्तुति दरें पीडब्ल्यूडी द्वारा स्वीकृत दरों से अधिक होनी चाहिए।

8- स्वीकृत आपूर्तिकर्ता को भुगतान तकनीक/अवराभियांत द्वारा सामाग्री की गुणवत्ता की परमाणित होने तथा मापन के उपरांत ही किया जायेगा गुणवत्ता खराब होने पर आपूर्तिकर्ता को भुगतान नहीं किया जायेगा। टेंडर की प्रक्रिया निरस्त/अस्थगित करने का पूर्ण अधिकार ग्राम पंचायत को होगा।

प्रधान
गुन्नूमास्टर

सचिव
हौसला प्रसाद

कार्यालय ग्राम पंचायत रजडेरवा थारु विकासखंड पचपेड़वा जनपद बलरामपुर

निविदा/सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है की पंचम वित्त आयोग/स्वच्छ भारत अभियान पेज 2 व 15वां वित निर्माण कार्य नाली /खड़ंजा निर्माण/खड़ंजा मरम्मत/पंचायत भवन निर्माण/सामुदायिक शौचालय आयोग/मनरेगा/एस0एल0डब्ल्यू0एम0 आदि योजना के अंतर्गत वर्ष 2025-2026मैं कराए जाने वाले निर्माण/आंगनबाड़ी केंद्र निर्माण मरम्मत/ इंडिया मार्का 2 हैंडपंप मरम्मत व रिवोर/स्कूल शौचालय मरम्मत/ स्ट्रीट लाइट इंटरलॉकिंग रोड निर्माण सीसी रोड निर्माण ,सी एस सी सेंटर निर्माण कार्य मनरेगा योजना अन्तर्गत फूल व बांस की खेती ऐनम सेंटर रंगाई पुताई व मरम्मत कार्य खाद्य एवं रसद गोदाम निर्माण कार्य आर आर सी सेंटर, सोख्ता गड्ढा सीट चेमबर खाद गड्ढा खेल मैदान ,सोलर लाइट ह्यूमपाइप/पंचायत कार्यालय सामग्री कायाकल्प संबंधित कार्य/रजिस्टर्ड फर्म एजेंसी से सामग्री क्रय हेतु प्रथम श्रेणी ईट इंटर लाकिंग ईट मिट्टी क्रय पत्थर गिट्टी, बालू,मोरंग ह्यूम पाइप प्राइमर, पेंट ,शौचालय लोहे का दरवाजा इंडियामार्का हैंडपंप मरम्मत व रिबोर एवं मोरंग/ सीरिया /सीमेंट इंटरलॉकिंग/ टाइल्स विभिन्न माप की ह्यूम पाईप मनरेगा योजना के तहत पशु शेड, सोख्ता गड्ढा निर्माण गौशाला में गौ वंश को खिलाने हेतु भूसा दाना चुनी चोकर वा भंडारण हेतु कक्ष निर्माण आदि से संबंधित सामाग्री आदि क्रय हेतु सामाग्री की सील बन्द निविदा दिनांक 02-04-2025 से दिनांक 04-04-2025 तक डाला जाएगा जो तत्पश्चात दिनांक 5-04-2025 को ग्राम पंचायत कार्यलय पर अपराह्न 12बजे ग्राम पंचायत कार्यालय पर खोली जायेगी। उक्त सभी आपूर्ति की जाने वाली सामाग्री वर्ष 2025/26तक मान्य होगी। वर्तमान समय मे उत्तर प्रदेश लोकनिर्माण विभाग विशिस्तियों केप अनुसार परिमंडल गोण्डा द्वारा निर्धारित दरों के सापेक्ष की जायेगी। शेष नियम व शर्ते किसी भी समय ग्राम पंचायत कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है।।

नियम व शर्ते

1- जिस आपूर्तिकर्ता की दर सबसे कम हो उसे ग्राम पंचायत द्वारा कराए जाने वाले कार्य हेतु सूचित किया जायेगा यदि आपूर्तिकर्ता द्वारा निर्धारित समय सीमा पर आपूर्ति नहीं किया जाता है तो ऐसी दसा में ग्राम पंचायत आपके आदेश निरस्त करते हुए वरीयता कम मे अन्य फर्मो को आपूर्ति आदेश देने के लिए स्वतन्त्र होगी।

2- फर्म का जीएसटी पंजीकृत हो आयेकर देता हो की प्रमाणित छायाप्रति संलग्न करना आवश्यक है। विगत तीन वर्ष का आयकर क्लीयरेंस संलग्न करना अनिवार्य है।3- ग्राम पंचायत सचिव/ग्राम प्रधान द्वारा नामित अधिकारियों कर्मचारियों द्वारा आपूर्तिकर्ता की मौजूदगी में निविदा खेला जाएगा।

4- सामाग्री की आपूर्ति ग्राम पंचायत की परिधि में स्वीकिर्त दरों से निर्धारित कार्यस्थल पर करनी होगी।

5- जो दरें प्रस्तुत की जायें वह दरें जीएसटी तथा धुलाई,चढ़ाई, उतरवाई तथा अन्य कर जोड़कर प्रस्तुत की जाए।

6- सामाग्री की आपूर्ति सचिव ग्राम पंचायत/ग्राम प्रधान के आपूर्ति आदेश पर ही की जायेगी।

7- प्रस्तुति दरें पीडब्ल्यूडी द्वारा स्वीकृत दरों से अधिक होनी चाहिए।

8- स्वीकृत आपूर्तिकर्ता को भुगतान तकनीक/अवराभियांत द्वारा सामाग्री की गुणवत्ता की परमाणित होने तथा मापन के उपरांत ही किया जायेगा गुणवत्ता खराब होने पर आपूर्तिकर्ता को भुगतान नहीं किया जायेगा। टेंडर की प्रक्रिया निरस्त/अस्थगित करने का पूर्ण अधिकार ग्राम पंचायत को होगा।

प्रधान
जोगिन्दर

सचिव
हौसला प्रसाद

कार्यालय ग्राम पंचायत सुगानगर डुमरी विकासखंड पचपेड़वा जनपद बलरामपुर

निविदा/सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है की पंचम वित्त आयोग/स्वच्छ भारत अभियान पेज 2 व 15वां वित निर्माण कार्य नाली /खड़ंजा निर्माण/खड़ंजा मरम्मत/पंचायत भवन निर्माण/सामुदायिक शौचालय आयोग/मनरेगा/एस0एल0डब्ल्यू0एम0 आदि योजना के अंतर्गत वर्ष 2025-2026मैं कराए जाने वाले निर्माण/आंगनबाड़ी केंद्र निर्माण मरम्मत/ इंडिया मार्का 2 हैंडपंप मरम्मत व रिवोर/स्कूल शौचालय मरम्मत/ स्ट्रीट लाइट इंटरलॉकिंग रोड निर्माण सीसी रोड निर्माण ,सी एस सी सेंटर निर्माण कार्य मनरेगा योजना अन्तर्गत फूल व बांस की खेती ऐनम सेंटर रंगाई पुताई व मरम्मत कार्य खाद्य एवं रसद गोदाम निर्माण कार्य आर आर सी सेंटर, सोख्ता गड्ढा सीट चेमबर खाद गड्ढा खेल मैदान ,सोलर लाइट ह्यूमपाइप/पंचायत कार्यालय सामग्री कायाकल्प संबंधित कार्य/रजिस्टर्ड फर्म एजेंसी से सामग्री क्रय हेतु प्रथम श्रेणी ईट इंटर लाकिंग ईट मिट्टी क्रय पत्थर गिट्टी, बालू,मोरंग ह्यूम पाइप प्राइमर, पेंट ,शौचालय लोहे का दरवाजा इंडियामार्का हैंडपंप मरम्मत व रिबोर एवं मोरंग/ सीरिया /सीमेंट इंटरलॉकिंग/ टाइल्स विभिन्न माप की ह्यूम पाईप मनरेगा योजना के तहत पशु शेड, सोख्ता गड्ढा निर्माण गौशाला में गौ वंश को खिलाने हेतु भूसा दाना चुनी चोकर वा भंडारण हेतु कक्ष निर्माण5 आदि से संबंधित सामाग्री आदि क्रय हेतु सामाग्री की सील बन्द निविदा दिनांक 03-04-2025 से दिनांक 15-04-2025 तक डाला जाएगा जो तत्पश्चात दिनांक 6-04-20255 को ग्राम पंचायत कार्यलय पर अपराह्न 11बजे ग्राम पंचायत कार्यालय पर खोली जायेगी। उक्त सभी आपूर्ति की जाने वाली सामाग्री वर्ष 2025/26तक मान्य होगी। वर्तमान समय मे उत्तर प्रदेश लोकनिर्माण विभाग विशिस्तियों के अनुसार परिमंडल गोण्डा द्वारा निर्धारित दरों के सापेक्ष की जायेगी। शेष नियम व शर्ते किसी भी समय ग्राम पंचायत कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है।।

नियम व शर्ते

1- जिस आपूर्तिकर्ता की दर सबसे कम हो उसे ग्राम पंचायत द्वारा कराए जाने वाले कार्य हेतु सूचित किया जायेगा यदि आपूर्तिकर्ता द्वारा निर्धारित समय सीमा पर आपूर्ति नहीं किया जाता है तो ऐसी दसा में ग्राम पंचायत आपके आदेश निरस्त करते हुए वरीयता कम मे अन्य फर्मो को आपूर्ति आदेश देने के लिए स्वतन्त्र होगी।

2- फर्म का जीएसटी पंजीकृत हो आयेकर देता हो की प्रमाणित छायाप्रति संलग्न करना आवश्यक है। विगत तीन वर्ष का आयकर क्लीयरेंस संलग्न करना अनिवार्य है।

3- ग्राम पंचायत सचिव/ग्राम प्रधान द्वारा नामित अधिकारियों कर्मचारियों द्वारा आपूर्तिकर्ता की मौजूदगी में निविदा खेला जाएगा।

4- सामाग्री की आपूर्ति ग्राम पंचायत की परिधि में स्वीकिर्त दरों से निर्धारित कार्यस्थल पर करनी होगी।

5- जो दरें प्रस्तुत की जायें वह दरें जीएसटी तथा धुलाई,चढ़ाई, उतरवाई तथा अन्य कर जोड़कर प्रस्तुत की जाए।

6- सामाग्री की आपूर्ति सचिव ग्राम पंचायत/ग्राम प्रधान के आपूर्ति आदेश पर ही की जायेगी।

7- प्रस्तुति दरें पीडब्ल्यूडी द्वारा स्वीकृत दरों से अधिक होनी चाहिए।

8- स्वीकृत आपूर्तिकर्ता को भुगतान तकनीक/अवराभियांत द्वारा सामाग्री की गुणवत्ता की परमाणित होने तथा मापन के उपरांत ही किया जायेगा गुणवत्ता खराब होने पर आपूर्तिकर्ता को भुगतान नहीं किया जायेगा। टेंडर की प्रक्रिया निरस्त/अस्थगित करने का पूर्ण अधिकार ग्राम पंचायत को होगा।

प्रधान
तारावती

सचिव
हौसला प्रसाद

संक्षिप्त ख़बरें

शिक्षक बोले 'अप्रैल फूल' नहीं बनेंगे, विरोध का राष्ट्रव्यापी ऐलान

मथुरा। नेशनल मूवमेंट फॉर ओल्ड पेंशन स्कीम (एनएमओपीएस) तथा ऑल टीचर्स एंप्लॉयज वेलफेयर एसोसिएशन (अटेवा) के राष्ट्रीय आह्वान पर एक अप्रैल को काला दिवस मनाया जाएगा। साथ ही शिक्षक कर्मचारी काला दिवस पर हाथों में काली पट्टी बांधकर कल अपराह्न तीन बजे जनपद के शिक्षक कलेक्ट्रेट पहुंचकर प्रदर्शन करते हुए जिलाधिकारी को ज्ञापन देंगे। अटेवा की जिलाध्यक्ष प्रदीपिका फौजदार ने कहा कि एक अप्रैल 2004 को पुरानी पेंशन को समाप्त कर उसके स्थान पर शेयर मार्केट आधारित नई पेंशन स्कीम नेशनल पेंशन सिस्टम लागू की गई थी। यह अप्रैल फूल बनाने जैसा है, यह हम नहीं होने देंगे। इसके विरोध में शिक्षक कर्मचारी अधिकारी कई वर्षों से पुरानी पेंशन बहाली के लिए आंदोलनरत हैं। अटेवा की जिलाध्यक्ष प्रदीपिका फौजदार ने कहा कि एनएमओपीएस के राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा अटेवा के प्रदेश अध्यक्ष विजय कुमार बंधु ने समस्त शिक्षक कर्मचारी तथा कर्मचारियों अधिकारियों से आवाहन किया है की एक अप्रैल को पुरानी पेंशन बहाली के लिए तथा एनपीएस और यूपीएस का विरोध दर्ज कराते हुए काला दिवस मनाए। प्रदेश आईटी सेल प्रभारी प्रमोद पट, जिला संरक्षक शैलेन्द्र यादव तथा उपाध्यक्ष कसान सिंह ने कहा पूरे देश में पुरानी पेंशन बहाली तक संघर्ष के लिए सभी शिक्षक कर्मचारी प्रतिबद्ध है। मीडिया प्रभारी मनीष दयाल ने जानकारी देते हुए बताया कि एक अप्रैल को सांय तीन बजे प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन जिलाधिकारी को दिया जाएगा। इस प्रदर्शन में बड़ी संख्या में सभी विभागों के शिक्षक कर्मचारी सहभागिता करते हुए अपना विरोध प्रकट करेंगे। जिला आईटी सेल प्रभारी करनपाल सिंह तथा जिला कोषाध्यक्ष राजेश सरोज ने कहा कि एक अप्रैल 2025 से सरकार एकीकृत पेंशन योजना यूपीएस लागू करने जा रही है जो कहीं से भी कर्मचारी हित में नहीं है।

आपसी रंजिश में युवक को मारी गोली, गंभीर रूप से घायल

मथुरा। छाता के गांव अकबरपुर में आपसी रंजिश के चलते 20 वर्षीय युवक रवि पुत्र भूदेव को चंदन पुत्र धनीराम निवासी अकबरपुर ने गोली मार दी। गोली युवक के कमर के नीचे जाकर लगी जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। जानकारी के अनुसार दोनों के मध्य आपसी रंजिश थी। गोली मारने वाले चंदन पुत्र धनीराम की बहन ने रवि पुत्र भूदेव के भाई के साथ भाग कर शादी कर ली थी जिसके खिलाफ था चंदन। जिसके कारण चंदन और रवि में आपसी रंजिश बन गयी। जिसके कारण यह गोली मारी गई। गंभीर रूप से घायल हुए युवक को मथुरा की सिटी हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया है।

सहारनपुर के युवक ने फांसी लगाकर दी जान

मथुरा। वृंदावन छटीकरा मार्ग स्थित ओमेक्स स्थित बंद फ्लैट में एक युवक का शव फंदे से लटका मिला। युवक की महिला मित्र की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम गृह भेजा हैं।शव से प्रतीत हो रहा है कि युवक ने दो-तीन दिन पहले यह आत्मघाती कदम उठाया होगा। पुलिस की सूचना पर परिजन सहारनपुर से वृंदावन आ रहे हैं।ओमैक्स स्थित कृष्णा ब्लॉक 7 सी के अंदर से बंद फ्लैट 003 में शनिवार शाम को युवक फंदे से लटका मिला। फ्लैट के अंदर शव की जानकारी तब हुई जब युवक की महिला मित्र कुरूक्षेत्र स्थित अपने घर से कई दिनों के बाद आई। फ्लैट के बाहर से गेट पर दस्तक देने परअंदर से किसी तरह की प्रतिक्रिया नहीं आई तो उन्होंने फ्लैट की खिड़की से झांक कर अंदर देखा। युवक का शव लटका फंदे पर लटका मिला महिला मित्र की सूचना पर पहुची पुलिस ने फ्लैट के गेट को खुलवाया और शव को फंदे से नीचे उतारने के बाद पोस्टमार्टम गृह भेजा। पुलिस ने मृतक युवक की पहचान सहारनपुर के सरसावा थाना क्षेत्र के गांव मांझरी निवासी 29 वर्षीय राहुल शर्मा पुत्र संजय शर्मा के रूप में की है।पुलिस ने घटना की जानकारी मृतक के परिजनों को दी है संभावना जताई जा रही है कि सहारनपुर निवासी राहुल द्वारा इस आत्मघाती कदम उठाने के पीछे शेयर में घाटा होना भी कारण हो सकता है। क्यों कि यह किराए के फलैट में युवक शेयर ट्रेडिंग का कार्य करता था। वृंदावन कोतवाली प्रभारी रवि त्यागी ने बताया कि युवक राहुल यहां किराए पर एक दिसंबर 2014 से कुरूक्षेत्र निवासी महिला मित्र के साथ रहता था। वह शेयर ट्रेडिंग का कार्य करता था।मौत का कारण स्पष्ट नहीं हो सका है। जांच की जा रही है। शव दो तीन दिन पुराना प्रतीत हो रहा है।

लखनऊ नगर निगम की राजस्व वसूली में बड़ा उछाल, 1200 करोड़ तक पहुंचने की संभावना

स्वतंत्र प्रभात

लखनऊ। नगर निगम की कड़ी मेहनत और सख्त वसूली अभियान के चलते इस वित्तीय वर्ष में हाउस टैक्स और अन्य राजस्व संग्रह में जबरदस्त बढ़ोतरी देखी जा रही है। नगर आयुक्त इंद्रजीत सिंह के निर्देश पर 1000 करोड़ रुपये के हाउस टैक्स लक्ष्य को लेकर नगर निगम के कर्मचारी पूरी तत्परता से कार्य कर रहे हैं। नगर निगम के मुख्य कर निर्धारण अधिकारी अशोक सिंह ने जानकारी दी कि पिछले वित्तीय वर्ष में 425 करोड़ रुपये का हाउस टैक्स प्राप्त हुआ था, जबकि इस वर्ष 30 मार्च तक यह आंकड़ा बढ़कर 495 करोड़ रुपये हो चुका है। इसके अलावा, अन्य मदों से नगर निगम ने अब तक लगभग 798 करोड़ रुपये का राजस्व अर्जित किया है। यदि पिछले वित्तीय वर्ष के कुल राजस्व की बात करें तो कर, जल कर और अन्य स्रोतों से मिलाकर 909 करोड़ रुपये की प्राप्ति हुई थी। वहीं, वित्तीय वर्ष 2024-25 में अब तक यह आंकड़ा 1124 करोड़ रुपये तक पहुंच चुका है। मुख्य कर निर्धारण अधिकारी अशोक सिंह के मुताबिक आगामी दो दिनों की वसूली के बाद यह आंकड़ा 1200 करोड़ रुपये तक पहुंच सकता है। नगर निगम की इस उपलब्धि से विभाग को अतिरिक्त राजस्व प्राप्त होगा, जिससे शहर के विकास कार्यों में तेजी लाई जा सकेगी।

नवसंवत्सर की मंगलकामनाओं के साथ नववर्ष मेला का हुआ समापन

स्वतंत्र प्रभात

मथुरा। नववर्ष मेला समिति के तत्वाधान में सेठ बी0एन0 पोद्दार इंटर कॉलेज में आयोजित 24 वें विशाल नववर्ष मेला के नववर्ष समारोह में मुख्य अतिथि श्री राधावल्लभ संप्रदाय प्रधान पीठाधिपति तिलकायत अधिकारी गोस्वामी श्रीहित मोहित मराल जी महाराज ने नवसंवत्सर की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि श्री कृष्ण ने धर्म की रक्षा के लिए ब्रजभूमि में जन्म लिया था। हमें भी आज से यह प्रण लेना होगा कि हम भी हिंदू तिथि के अनुसार अपना जन्म दिवस व सालगिरह बनायेंगे। विशिष्ट अतिथि बेबीरानी मौर्य मंत्री महिला कल्याण एवं बाल विकास उत्तर प्रदेष ने कहा कि यह नवसंवत्सर हिंदुओं का नववर्ष है। यह सदियों से बनता आ रहा है। बीते कुछ समय में पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव के कारण हम चौत्र शुक्ल प्रतिपदा को भूलकर एक जनवरी को नववर्ष बनाने लगे थे। भारत विश्व गुरु तभी बनेगा जब हम देश की संस्कृति के लिए निरंतर कार्य करते रहेंगे। मंगलायतन यूनिवर्सिटी के कुलपति पीके कसोरा, जिला पंचायत अध्यक्ष किशन चौधरी एवं कार्यक्रम स्वागताध्यक्ष कल्यानदास अग्रवाल बृजवासी समाज सेवी एवं उद्योगपति ने नवसंवत्सर की मंगल कामना देते हुए विचार व्यक्त किए। इससे पूर्व मां भगवती के चित्रपट के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर नववर्ष समारोह शुरू हुआ। अतिथियों का स्वागत किया गया। कार्यक्रम का संचालन महामंत्री प्रदीप श्रीवास्तव ने एवं धन्यवाद ज्ञापन अध्यक्ष कमलेश अरोड़ा ने किया।

मथुरा में प्रसिद्ध न्यू घड़ी डिटर्जेंट पाउडर की फैक्ट्री सील

स्वतंत्र प्रभात

मथुरा। महावन क्षेत्र के गांव देवकरन में संचालित हो रही न्यू घड़ी डिटर्जेंट पाउडर की फैक्ट्री सील को सील कर दिया गया है। दिल्ली के वाणिज्य न्यायालय द्वारा मामले की जांच के लिए एक टीम का गठन किया था। टीम रविवार को मथुरा पहुंची और महावन थाने में पुलिस से संपर्क किया। स्थानीय पुलिस को साथ लेकर टीम नगला देवकरन पहुंची। यहां टीम को फैक्ट्री में काम होते हुए मिला। भारी मात्रा में रैपर और डिटर्जेंट मिला। टीम ने यहां मिले निर्माण और पैकिंग सामग्री के अलावा तैयार माल के नमूने संग्रहित किये। महावन थाने के उपनिरीक्षक योगेश कुमार ने बताया कि टीम ने अपना काम किया। थाने की पुलिस टीम की सुरक्षा के लिए मौके पर मौजूद रही। फैक्ट्री को सील कर दिया गया है। फैक्ट्री के मालिक अनूप सारस्वत को बताया गया । टीम ने 16 अप्रैल को फैक्ट्री संचालक को न्यायालय में अपना पक्ष रखने का निर्देश दिया गया है। टीम में पारस और अन्य अधिवक्ता शामिल थे। नामी गिरामी ब्रांड घडी डिटर्जेंट के नाम से मिलता नाम न्यू घडी डिटर्जेंट बता ब्रांड की विश्वसनीयता का लाभ उठाने और ब्रांड की छवि को बिगाड़ने जैसे कई सवालों का फैक्ट्री संचालक को जवाब देना होगा।

पुलिस की आंखों में मिर्च नही डाल सके 'मिर्ची लुटेरे' दबोचे

स्वतंत्र प्रभात

मथुरा। थाना कोसीकलां पुलिस ने लूट की योजना बनाते चार आरोपितों को पकडा है। इनके पास से दो मोटर साइकिल, दो तमंचा, पांच जिन्दा कारतूस, दो मिर्च के पैकेट बरामद हुए हैं। प्रभारी निरीक्षक थाना कोसीकलां अजीत सिंह ने बताया कि दिलीप पुत्र भजनलाल निवासी मिर्जापुर थाना हाइवे मथुरा, विजय पुत्र सुरेशचन्द निवासी नौ बीसा सौंख थाना मगोर्रा, पंकज उर्फ पंखू पुत्र बाबूलाल निवासी मोहनपुर अडूकी थाना हाईवे मथुरा, विपिन नौहवार पुत्र जगदीश सिंह निवासी पारसोली थाना नौहझील मथुराको शामकेन फैक्टरी के पीछे की तरफ हताना गांव को जाने वाले रास्ते पर पडने वाले मोड से पहले दाहिनी तरफ बने एक टूटे फूटे कमरे व टीन शेड में से गिरफ्तार किया गया। पुलिस को पूंछताछ में अभियुक्तों ने बताया कि वह पशु पैंठ से आने वाले लोगों के साथ आंखो में मिर्ची पाउडर डालकर लूट की योजना बना रहे थे। कार्यवाही करने वाली टीम में प्रभारी निरीक्षक थाना कोसीकलां अजीत सिंह, एसआई अरविन्द पूनिया चौकी प्रभारी कोटवन, एसआई अंकित मलिक चौकी प्रभारी बठैन गेट, एसआई उत्तम चौहान चौकी प्रभारी जिंदल चौराहा, एअसाई मनमोहन शर्मा थाना कोसीकलां आदि थे।

गेहूं के खेतों में आग की घटनाओं से किसानों में आक्रोश

स्वतंत्र प्रभात

मथुरा। अब गेहूं की फसल पक कर तैयार है। कटाई का कार्य खेतों में प्रारंभ हो चुका है। बरसाना और बलदेव थाना क्षेत्र के गांवों में 150 बीघा गेहूं की फसल विद्युत तारों में निकली चिंगारी से जलकर राख हो गई।किसानों की पूंजी उनकी खेतों में लहलहाती फसल होती है। इस समय खेतों में गेहूं फसल पककर तैयार खड़ी है। खून पसीने से सींच कर तैयार हुई गेहूं की फसल को किसान सजोने की तैयारी में जुटा है। ऐसे में गेहूं के खेतों में बढ़ती आग की घटनाएं चिंतित करने वाली हैं। इससे किसानों में आक्रोश है। भाकियू चढूनी मंडल अध्यक्ष रामवीर सिंह तोमर ने कहा किसान की आर्थिकी स्थिति पहले से ही खराब है, कभी प्राकृतिक आपदा किसान की कमर तोड़ देती है, तो कभी सिस्टम की लापरवाही। हर साल होती घटनाओं से भी कोई सबक नहीं लिया जाता। जरा सी तेज हवाएं चलने से जर्जर लाइनों के ढीले तारों के आपस में टकराने से लगी चिंगारी से किसानों के खून पसीने की गाढ़ी कमाई पल भर में राख में तब्दील हो जाती है। हथकोली के किसान रमेश चंद्र सिकरवार, नगला लोका के हीरो काका, आंगई के मेहताब सिंह नेताजी, बरौली के हरिपाल सिंह परिहार , श्याम सिंह , जादोपुर के पंचम सिंह, दघेंटा के किसान कुंतभोज, ओमवीर सिंह, सैदपुर के गुड्डू सरपंच आदि ने कहा है कि खेतों में गेहूं की फसल सूखकर खड़ी है। इसमें तनिक सी भी चिंगारी बारूद का काम करती है। बिजली विभाग मेंटेनेंस के नाम पर खाना पूर्ति करता है। अधिकारी किसान समस्याओं को लेकर संवेदनशील नहीं हैं। गर्मियों से पहले जर्जर लाइनों को बदलने, खराब, टूटे इंसुलेटरों को बदलने एवं ढीले तारों एवं तारों के ऊपर पेड़ों की टहनियों को काटने के लिए बार बार कहने के बाद भी जिम्मेदार अधिकारियों पर कोई फर्क नहीं पड़ रहा । सरकार को चाहिए कि जिस क्षेत्र में इस तरह की घटनाएं हों उन लापरवाह अधिकारियों पर सख्त कार्रवाई कर उनकी तनख्वाह काट कर किसानों को मुआवजा दिया जाए। सभी ने मुख्यमंत्री से मांग की है कि पीड़ित किसान को तत्काल पचास हजार रुपए दिए जाएं।

गांव गांव जाकर किसानों को एकजुट करेंगे: सुनील

स्वतंत्र प्रभात

मथुरा। भारतीय किसान यूनियन सुनील के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुनील चौधरी रविवार को मथुरा पहुंचे। मथुरा महानगर के लक्ष्मी नगर चौराहे पर कार्यकर्ताओं ने राष्ट्रीय अध्यक्ष का फूल मालाओं से जोरदार स्वागत किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष सुनील चौधरी का काफिला मथुरा महानगर के कृष्णापुरी चौराहा आर्य समाज रोड होली गेट चोराहा होते हुए कोतवाली रोड चौबिया पाड़ा गली महोली की पौर मे भारतीय किसान यूनियन सुनील के राष्ट्रीय प्रवक्त पवन चतुर्वेदी के आवास पर पहुंचा और उनके स्वास्थ्य की जानकारी ली 27 मार्च को आगरा के अकोला हुई पंचायत में जाते समय पवन चतुर्वेदी का ग्वालियर रोड पर एक्सीडेंट हो गया था। सुनील चौधरी ने कहाकि मथुरा जनपद में किसान परेशान है लेकिन जिला प्रशासन किसानों की तरफ ध्यान नहीं दे रहा। मथुरा जनपद में प्राकृतिक आपदा बरसात ने फसलों को नुकसान पहुंचा है। नकसान का सर्वे नहीं हुआ है तो रहात कैसे मिलेगी। विद्युत विभाग किसानों का निरंतर उत्पीड़न कर रहा है। उन्होंने कहा कि किसानों का एकजुट होना जरूरी है। हमारी पदाधिकारी और कार्यकर्ता गांव गांव जाकर किसानों की समस्याओं को सुने उसका निस्तारण कराएं। जनपद में सदस्यता अभियान चलाकर अधिक से अधिक युवाओं किसानों को संगठन से जोड़ने का काम किया जाएगा। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष गजेंद्र सिंह गावर, राष्ट्रीय महासचिव लक्ष्मण चौधरी, जिला अध्यक्ष थान सिंह पहलवान, बालकृष्ण दीक्षित, महानगर अध्यक्ष भरत अग्रवाल, नगर अध्यक्ष करन पाठक, किसान नेता भगवान दास तोमर, तनवीर कुरेशी, फैजान, कृष्ण फौजदार, मोहन श्याम पाठक, शिव बघेल, चौधरी चरण सिंह प्रमुख रूप से मौजूद थे।

खाद्य सुरक्षा विभाग की टीम ने छापामारी कर नगर पंचायत डुमरियागंज के दो दुकानों से भरे सैंपल

सिद्धार्थनगर । खाद्य सुरक्षा विभाग की टीम ने नवरात्रि के दौरान डुमरियागंज नगर पंचायत के कस्बे में स्थित कृष्णा स्वीट्स और पूजा स्वीट हाउस पर रविवार को खाद्य सुरक्षा विभाग की टीम ने छापामारी करते हुए सैंपल लिया। मुख्य खाद्य सुरक्षा अधिकारी नरेंद्र प्रताप सिंह ने बताया कि शिकायत मिलने पर रविवार को शहर के एचडीएफसी बैंक के सामने कृष्णा स्वीट्स और रास्ती नदी के पुल के पहले पूजा स्वीट हाउस का खाद्य सुरक्षा विभाग की टीम के साथ निरीक्षण किया गया और दोनों दुकानों से मिठाइयों का सैंपल गुणवत्ता जांच के लिए लिया गया है जिसको प्रयोगशाला भेजा जायेगा। यदि सैंपल में किसी भी प्रकार की गड़बड़ी सामने आई तो खाद्य प्रतिष्ठानों के संचालकों और दूकानदारों के खिलाफ उचित कार्रवाई की जाएगी। एहतियातन सामग्री को नष्ट करने के भी निर्देश जारी किए जायेंगे। ताकि इनका सेवन कर किसी का स्वास्थ्य न बिगड़े, उन्होने बताया कि पूर्व में भी 25 जनवरी को खीरा मंडी स्थित वैष्णवी मिष्ठान भंडार का सैंपल भरा गया था और जांच के लिए लखनऊ प्रयोगशाला भेजा है जाच रिपोर्ट आने के बाद उनके खिलाफ भी उचित कार्यवाही की जाएगी।

कार्यालय ग्राम पंचायत लेबुड़वा विकासखंड पचपेड़वा जनपद बलरामपुर

निविदा/सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है की पंचम वित्त आयोग/स्वच्छ भारत अभियान पेज 2 व 15वां वित निर्माण कार्य नाली /खड़ंजा निर्माण/खड़ंजा मरम्मत/पंचायत भवन निर्माण/सामुदायिक शौचालय आयोग/मनरेगा/एस0एल0डब्ल्यू0एम0 आदि योजना के अंतर्गत वर्ष 2025-2026मैं कराए जाने वाले निर्माण/आंगनबाड़ी केंद्र निर्माण मरम्मत/ इंडिया मार्का 2 हैंडपंप मरम्मत व रिबोर/स्कूल शौचालय मरम्मत/ स्ट्रीट लाइट इंटरलॉकिंग रोड निर्माण सीसी रोड निर्माण ,सी एस सी सेंटर निर्माण कार्य मनरेगा योजना अन्तर्गत फूल व बांस की खेती ऐनम सेंटर रंगाई पुताई व मरम्मत कार्य खाद्य एवं रसद गोदाम निर्माण कार्य आर आर सी सेंटर, सोख्ता गड्ढा सीट चेमबर खाद गड्ढा खेल मैदान ,सोलर लाइट ह्यूमपाइप/पंचायत कार्यालय सामग्री कायाकल्प संबंधित कार्य/रजिस्टर्ड फर्म एजेंसी से सामग्री क्रय हेतु प्रथम श्रेणी ईट इंटर लाकिंग ईट मिट्टी क्रय पत्थर गिट्टी, बालू,मोरंग ह्यूम पाइप प्राइमर, पेंट ,शौचालय लोहे का दरवाजा इंडियामार्का हैंडपंप मरम्मत व रिबोर एवं मोरंग/ सीरिया /सीमेंट इंटरलॉकिंग/ टाइल्स विभिन्न माप की ह्यूम पाईप मनरेगा योजना के तहत पशु शेड, सोख्ता गड्ढा निर्माण गौशाला में गौ वंश को खिलाने हेतु भूसा दाना चुनी चोकर वा भंडारण हेतु कक्ष निर्माण आदि से संबंधित सामाग्री आदि क्रय हेतु सामाग्री की सील बन्द निविदा दिनांक 04-04-2025से दिनांक 05-04-2025 तक डाला जाएगा जो तत्पश्चात दिनांक 07-04-2025 को ग्राम पंचायत कार्यलय पर अपराह्न 11बजे ग्राम पंचायत कार्यालय पर खोली जायेगी। उक्त सभी आपूर्ति की जाने वाली सामाग्री वर्ष 2025/26तक मान्य होगी। वर्तमान समय मे उत्तर प्रदेश लोकनिर्माण विभाग विशिस्तियों के अनुसार परिमंडल गोण्डा द्वारा निर्धारित दरों के सापेक्ष की जायेगी। शेष नियम व शर्ते किसी भी समय ग्राम पंचायत कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है।।

नियम व शर्ते

1- जिस आपूर्तिकर्ता की दर सबसे कम हो उसे ग्राम पंचायत द्वारा कराए जाने वाले कार्य हेतु सूचित किया जायेगा यदि आपूर्तिकर्ता द्वारा निर्धारित समय सीमा पर आपूर्ति नहीं किया जाता है तो ऐसी दसा में ग्राम पंचायत आपके आदेश निरस्त करते हुए वरीयता कम मे अन्य फर्मो को आपूर्ति आदेश देने के लिए स्वतन्त्र होगी।

2- फर्म का जीएसटी पंजीकृत हो आयेकर देता हो की प्रमाणित छायाप्रति संलग्न करना आवश्यक है। विगत तीन वर्ष का आयकर क्लीयरेंस संलग्न करना अनिवार्य है।

3- ग्राम पंचायत सचिव/ग्राम प्रधान द्वारा नामित अधिकारियों कर्मचारियों द्वारा आपूर्तिकर्ता की मौजूदगी में निविदा खेला जाएगा।

4- सामाग्री की आपूर्ति ग्राम पंचायत की परिधि में स्वीकिर्त दरों से निर्धारित कार्यस्थल पर करनी होगी।

5- जो दरें प्रस्तुत की जायें वह दरें जीएसटी तथा धुलाई,चढ़ाई, उतरवाई तथा अन्य कर जोड़कर प्रस्तुत की जाए।

6- सामाग्री की आपूर्ति सचिव ग्राम पंचायत/ग्राम प्रधान के आपूर्ति आदेश पर ही की जायेगी।

7- प्रस्तुति दरें पीडब्ल्यूडी द्वारा स्वीकृत दरों से अधिक होनी चाहिए।

8- स्वीकृत आपूर्तिकर्ता को भुगतान तकनीक/अवराभियांत द्वारा सामाग्री की गुणवत्ता की परमाणित होने तथा मापन के उपरांत ही किया जायेगा गुणवत्ता खराब होने पर आपूर्तिकर्ता को भुगतान नहीं किया जायेगा। टेंडर की प्रक्रिया निरस्त/अस्थगित करने का पूर्ण अधिकार ग्राम पंचायत को होगा।

प्रधान
राजाराम

सचिव
हौसला प्रसाद

कार्यालय ग्राम पंचायत धनखर पुर हांटी विकासखंड पचपेड़वा जनपद बलरामपुर।

निविदा/सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है की पंचम वित्त आयोग/स्वच्छ भारत अभियान पेज 2 व 15वां वित निर्माण कार्य नाली /खड़ंजा निर्माण/खड़ंजा मरम्मत/पंचायत भवन निर्माण/सामुदायिक शौचालय आयोग/मनरेगा/एस0एल0डब्ल्यू0एम0 आदि योजना के अंतर्गत वर्ष 2025-2026मैं कराए जाने वाले निर्माण/आंगनबाड़ी केंद्र निर्माण मरम्मत/ इंडिया मार्का 2 हैंडपंप मरम्मत व रिबोर/स्कूल शौचालय मरम्मत/ स्ट्रीट लाइट इंटरलॉकिंग रोड निर्माण सीसी रोड निर्माण ,सी एस सी सेंटर निर्माण कार्य मनरेगा योजना अन्तर्गत फूल व बांस की खेती ऐनम सेंटर रंगाई पुताई व मरम्मत कार्य खाद्य एवं रसद गोदाम निर्माण कार्य आर आर सी सेंटर, सोख्ता गड्ढा सीट चेमबर खाद गड्ढा खेल मैदान ,सोलर लाइट ह्यूमपाइप/पंचायत कार्यालय सामग्री कायाकल्प संबंधित कार्य/रजिस्टर्ड फर्म एजेंसी से सामग्री क्रय हेतु प्रथम श्रेणी ईट इंटर लाकिंग ईट मिट्टी क्रय पत्थर गिट्टी, बालू,मोरंग ह्यूम पाइप प्राइमर, पेंट ,शौचालय लोहे का दरवाजा इंडियामार्का हैंडपंप मरम्मत व रिबोर एवं मोरंग/ सीरिया /सीमेंट इंटरलॉकिंग/ टाइल्स विभिन्न माप की ह्यूम पाईप मनरेगा योजना के तहत पशु शेड, सोख्ता गड्ढा निर्माण गौशाला में गौ वंश को खिलाने हेतु भूसा दाना चुनी चोकर वा भंडारण हेतु कक्ष निर्माण आदि से संबंधित सामाग्री आदि क्रय हेतु सामाग्री की सील बन्द निविदा दिनांक 04-04-2025से दिनांक 06-04-2025 तक डाला जाएगा जो तत्पश्चात दिनांक 08-04-2025 को ग्राम पंचायत कार्यलय पर अपराह्न 11बजे ग्राम पंचायत कार्यालय पर खोली जायेगी। उक्त सभी आपूर्ति की जाने वाली सामाग्री वर्ष 2025/26तक मान्य होगी। वर्तमान समय मे उत्तर प्रदेश लोकनिर्माण विभाग विशिस्तियों के अनुसार परिमंडल गोण्डा द्वारा निर्धारित दरों के सापेक्ष की जायेगी। शेष नियम व शर्ते किसी भी समय ग्राम पंचायत कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है।।

नियम व शर्ते

1- जिस आपूर्तिकर्ता की दर सबसे कम हो उसे ग्राम पंचायत द्वारा कराए जाने वाले कार्य हेतु सूचित किया जायेगा यदि आपूर्तिकर्ता द्वारा निर्धारित समय सीमा पर आपूर्ति नहीं किया जाता है तो ऐसी दसा में ग्राम पंचायत आपके आदेश निरस्त करते हुए वरीयता कम मे अन्य फर्मो को आपूर्ति आदेश देने के लिए स्वतन्त्र होगी।

2- फर्म का जीएसटी पंजीकृत हो आयेकर देता हो की प्रमाणित छायाप्रति संलग्न करना आवश्यक है। विगत तीन वर्ष का आयकर क्लीयरेंस संलग्न करना अनिवार्य है।

3- ग्राम पंचायत सचिव/ग्राम प्रधान द्वारा नामित अधिकारियों कर्मचारियों द्वारा आपूर्तिकर्ता की मौजूदगी में निविदा खेला जाएगा।

4- सामाग्री की आपूर्ति ग्राम पंचायत की परिधि में स्वीकिर्त दरों से निर्धारित कार्यस्थल पर करनी होगी।

5- जो दरें प्रस्तुत की जायें वह दरें जीएसटी तथा धुलाई,चढ़ाई, उतरवाई तथा अन्य कर जोड़कर प्रस्तुत की जाए।

6- सामाग्री की आपूर्ति सचिव ग्राम पंचायत/ग्राम प्रधान के आपूर्ति आदेश पर ही की जायेगी।

7- प्रस्तुति दरें पीडब्ल्यूडी द्वारा स्वीकृत दरों से अधिक होनी चाहिए।

8- स्वीकृत आपूर्तिकर्ता को भुगतान तकनीक/अवराभियांत द्वारा सामाग्री की गुणवत्ता की परमाणित होने तथा मापन के उपरांत ही किया जायेगा गुणवत्ता खराब होने पर आपूर्तिकर्ता को भुगतान नहीं किया जायेगा। टेंडर की प्रक्रिया निरस्त/अस्थगित करने का पूर्ण अधिकार ग्राम पंचायत को होगा।

प्रधान
आमिर

सचिव
हौसला प्रसाद

कार्यालय ग्राम पंचायत कटैया भारी विकासखंड पचपेड़वा जनपद बलरामपुर

निविदा/सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है की पंचम वित्त आयोग/स्वच्छ भारत अभियान पेज 2 व 15वां वित निर्माण कार्य नाली /खड़ंजा निर्माण/खड़ंजा मरम्मत/पंचायत भवन निर्माण/सामुदायिक शौचालय आयोग/मनरेगा/एस0एल0डब्ल्यू0एम0 आदि योजना के अंतर्गत वर्ष 2025-2026मैं कराए जाने वाले निर्माण/आंगनबाड़ी केंद्र निर्माण मरम्मत/ इंडिया मार्का 2 हैंडपंप मरम्मत व रिबोर/स्कूल शौचालय मरम्मत/ स्ट्रीट लाइट इंटरलॉकिंग रोड निर्माण सीसी रोड निर्माण ,सी एस सी सेंटर निर्माण कार्य मनरेगा योजना अन्तर्गत फूल व बांस की खेती ऐनम सेंटर रंगाई पुताई व मरम्मत कार्य खाद्य एवं रसद गोदाम निर्माण कार्य आर आर सी सेंटर, सोख्ता गड्ढा सीट चेमबर खाद गड्ढा खेल मैदान ,सोलर लाइट ह्यूमपाइप/पंचायत कार्यालय सामग्री कायाकल्प संबंधित कार्य/रजिस्टर्ड फर्म एजेंसी से सामग्री क्रय हेतु प्रथम श्रेणी ईट इंटर लाकिंग ईट मिट्टी क्रय पत्थर गिट्टी, बालू,मोरंग ह्यूम पाइप प्राइमर, पेंट ,शौचालय लोहे का दरवाजा इंडियामार्का हैंडपंप मरम्मत व रिबोर एवं मोरंग/ सीरिया /सीमेंट इंटरलॉकिंग/ टाइल्स विभिन्न माप की ह्यूम पाईप मनरेगा योजना के तहत पशु शेड, सोख्ता गड्ढा निर्माण गौशाला में गौ वंश को खिलाने हेतु भूसा दाना चुनी चोकर वा भंडारण हेतु कक्ष निर्माण आदि से संबंधित सामाग्री आदि क्रय हेतु सामाग्री की सील बन्द निविदा दिनांक 03-04-2025से दिनांक 04-04-2025 तक डाला जाएगा जो तत्पश्चात दिनांक 06-04-2025 को ग्राम पंचायत कार्यलय पर अपराह्न 1ः30 बजे ग्राम पंचायत कार्यालय पर खोली जायेगी। उक्त सभी आपूर्ति की जाने वाली सामाग्री वर्ष 2025/26तक मान्य होगी। वर्तमान समय मे उत्तर प्रदेश लोकनिर्माण विभाग विशिस्तियों के अनुसार परिमंडल गोण्डा द्वारा निर्धारित दरों के सापेक्ष की जायेगी। शेष नियम व शर्ते किसी भी समय ग्राम पंचायत कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है।।

नियम व शर्ते

1- जिस आपूर्तिकर्ता की दर सबसे कम हो उसे ग्राम पंचायत द्वारा कराए जाने वाले कार्य हेतु सूचित किया जायेगा यदि आपूर्तिकर्ता द्वारा निर्धारित समय सीमा पर आपूर्ति नहीं किया जाता है तो ऐसी दसा में ग्राम पंचायत आपके आदेश निरस्त करते हुए वरीयता कम मे अन्य फर्मो को आपूर्ति आदेश देने के लिए स्वतन्त्र होगी।

2- फर्म का जीएसटी पंजीकृत हो आयेकर देता हो की प्रमाणित छायाप्रति संलग्न करना आवश्यक है। विगत तीन वर्ष का आयकर क्लीयरेंस संलग्न करना अनिवार्य है।

3- ग्राम पंचायत सचिव/ग्राम प्रधान द्वारा नामित अधिकारियों कर्मचारियों द्वारा आपूर्तिकर्ता की मौजूदगी में निविदा खेला जाएगा।

4- सामाग्री की आपूर्ति ग्राम पंचायत की परिधि में स्वीकिर्त दरों से निर्धारित कार्यस्थल पर करनी होगी।

5- जो दरें प्रस्तुत की जायें वह दरें जीएसटी तथा धुलाई,चढ़ाई, उतरवाई तथा अन्य कर जोड़कर प्रस्तुत की जाए।

6- सामाग्री की आपूर्ति सचिव ग्राम पंचायत/ग्राम प्रधान के आपूर्ति आदेश पर ही की जायेगी।

7- प्रस्तुति दरें पीडब्ल्यूडी द्वारा स्वीकृत दरों से अधिक होनी चाहिए।

8- स्वीकृत आपूर्तिकर्ता को भुगतान तकनीक/अवराभियांत द्वारा सामाग्री की गुणवत्ता की परमाणित होने तथा मापन के उपरांत ही किया जायेगा गुणवत्ता खराब होने पर आपूर्तिकर्ता को भुगतान नहीं किया जायेगा। टेंडर की प्रक्रिया निरस्त/अस्थगित करने का पूर्ण अधिकार ग्राम पंचायत को होगा।

प्रधान
बदरे आलम

सचिव
हौसला प्रसाद